स्थापित 1935
म्हारो लक्ष्य-राष्ट्र री प्रगति

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र
• जून २०२५ • वर्ष ७६ • अंक ०६
मूल्य : ₹ १० प्रति, वार्षिक ₹ १००

बधाई !

उत्तराखंड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के नव-निर्वाचित अध्यक्ष

श्री रंजीत टिबड़ेवाल

इस अंक में

संपादकीय
- गीता से मैंने जो सीखा

आपणी बात
- पवन जी को शुभ कामनाएँ

रपट
- सलाहकार उपसमिति की बैठक
- सम्मेलन समाचार- मायड़ भाषा कक्षा शुरु

प्रांतीय समाचार
- तमिलनाडु, पूर्वोत्तर, छत्तीसगढ़, झारखंड, कर्नाटक, उत्कल, उत्तराखण्ड, मध्यप्रदेश

संस्कार-संस्कृति चेतना

विशेष पेज-१६

रथयात्रा की हार्दिक शुभकामनाएँ !

CENTURYPLY®

CENTURYPLY®
CENTURYLAMINATES®
CENTURYVENEERS®
CENTURYDOORS®
CENTURYEXTERIA®
Decorative Exterior Laminates
CENTURYPVC®
CENTURYPARTICLEBOARD®
The Eco-friendly and Economical Board
CENTURYPROWUD®
MDF-The wood of the future
zykron®
FIBRE CEMENT BOARDS & PLANKS
SAINIK 710
WATERPROOF PLY
SAINIK LAMINATES™
BOLD & BEAUTIFUL

CENTURY PLYBOARDS (INDIA) LTD.
Century House, P-15/1, Taratala Road, Kolkata - 700 088
For any queries, SMS 'CPIL' to 56070 or call us on 1800 5722 122

समाज विकास

◆ जून २०२५ ◆ वर्ष ७६ ◆ अंक ६

◆ एक प्रति - ₹१० ◆ वार्षिक - ₹१००

अनुक्रमणिका

शीर्षक	पृष्ठ संख्या
● **संपादकीय :** गीता से मैंने जो सीखा	४-५
● **चिट्ठी आई है**	५
● **आपणी बात : शिव कुमार लोहिया** पवन जी को शुभकामनाएँ	७
● **रपट**	
सलाहकार उपसमिति की बैठक	८
सम्मेलन समाचार - सम्मेलन द्वारा मायड़ भाषा कक्षा शुरू	९
विशेष **संस्कार-संस्कृति चेतना**	
प्रतिभा का निस्वार संयुक्त रहने में वृद्ध पिता को घर से मत निकालो पाखंड यज्ञ का प्रसाद	१६-१७
● **प्रांतीय समाचार**	
तामिलनाडु, पूर्वोत्तर, छत्तीसगढ़, झारखंड, कर्नाटक, उत्कल, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश,	११-१४, १९-२०
● **विविध**	
हमारी विरासत परम्परा या प्रदर्शन? आपणी बात – स्तबक	२१-२४
● **आलेख**	
संस्कृति, साधक, विष्णु-ज्योति : आधुनिक असमिया संस्कृति – **उमेश खंडेलिया**	२५
नए सदस्यों का स्वागत	२८-३०

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
All India Marwari Federation

प्रशासनिक एवं संपर्क कार्यालय : ४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता - ७०००१७
फोन : ०३३-४००४ ४०८९

◆ email: aimf1935@gmail.com
◆ Website : www.marwarisammelan.com

स्वत्वाधिकारी ऑल इंडिया मारवाड़ी फेडरेशन के लिए **भानीराम सुरेका** द्वारा ऑल इंडिया मारवाड़ी फेडरेशन, ४बी, डकबैक हाउस (४ तल्ला), कोलकाता-१७ से प्रकाशित तथा सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित।

◆ **प्रेरक संपादक : सीताराम शर्मा** ◆ **संपादक : शिव कुमार लोहिया**

प्रकाशित रचनाओं से संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

दस्तावेज

'समाज सेवक' से 'समाज विकास'

सम्मेलन कार्यालय
समाज विकास के अक्तूबर, १९५८ के अंक से उद्धृत

प्रिय बन्धु,

यह अंक बहुत देर से जा रहा है। कारण, सच ही, कार्यालय के हाथ का या वश का नहीं रहा।

हुआ यह कि अगस्त अंक के बाद ऊपर से सूचना आयी कि इसी राज्य से **'समाज सेवक'** नाम का एक बंगला पाक्षिक निकल चला है इसलिए हमें कोई और नाम चुनना होगा।

डिक्लेरेशन हमारा ही कुछ पहले का था, तो भी स्थिति उससे बदली नहीं। फिर तो ऐसा नाम चुनने में जो काम का हो, सीधा-सरल हो, आप सब के मन का हो, और राजकीय नियम-विधान को भी स्वीकार हो, और फिर उस पर अपनी कार्य समिति की सहमति प्राप्त करके स्थानीय अधिकारियों से लेकर राजधानी तक की अनुमति प्राप्त करने में समय लगता है।

अनुमति अब ही आयी, और अंक हाथोंहाथ तैयार कराके नये नाम में आपके आगे उपस्थित किया जा रहा है। हमें विश्वास है **'समाज विकास'** के रूप में यह मासिक आप से और अधिक स्वागत और अपनत्व पायेगा।

सम्पादक
जगदीश एम.ए.,
नन्दकिशोर जालान, विजय सिंह केसरी

सम्मति

उज्ज्वल पाटनी जी ने कहा All India Marwari Federation बहुत अच्छा काम कर रही है और यह परिवार को संस्कार को धर्म को जोड़े रखने में बहुत शानदार काम कर रही हैं। मैं इनके कार्यों की सरहाना करता हूँ और उम्मीद करता हूँ इनके प्रयास समाज के हर व्यक्ति तक पहुंचेंगे। युवा युवतियां जितने भी लोग है वह इस मुहीम से जुड़ेंगे। संस्था के जितने भी सदस्य इसमें अपना रात दिन लगाकर काम कर रहे हैं। मैं उन सभी को बधाई देता हूँ। मारवाड़ी अच्छा काम करेंगे grow करेंगे तो हम साथ में खड़े हैं अपने लोग grow करेंगे तो अपने लोगो को खुशी होगी।

अखिल भारतीय समिति की बैठक,
२० जुलाई २०२५ (रविवार) ● समय : सुबह १०.३० बजे

राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक,
२० जुलाई २०२५ (रविवार) ● समय : सुबह २.३० बजे
द ग्रांड परंपरा गार्डेन, रायपुर, छत्तीसगढ़

गीता से मैंने जो सीखा

मानव के पास क्षमता का अक्षय भंडार है। स्वामी विवेकानंद ने हमें संदेश दिया कि 'आध्यात्मिक शक्तियों पर विश्वास रखो। मनुष्य के पास अक्षय शक्तियों का अक्षय भंडार है। उसकी आत्मा सर्वोपरि हैं। मानव अद्वितीय है। 'श्लोक १५.७ में कहा गया है कि ममैवांशो जीवलोके जीवभूत सनातनः- इस जगत में सभी जीव मेरे शाश्वत अंश है। किंतु विडंबना है जिस मानव को प्रकृति का अन्यतम रचना बनाकर भेजा गया है वह भौतिक सोच के कारण अपनी क्षमता गंवा रहा है। गीता में कहा गया है **उद्धरेत आत्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्** - व्यक्ति को स्वयं का उत्थान स्वयं ही करना चाहिए ना कि स्वयं को नीचे गिराने में। मनुष्य किसी भी परिस्थिति में हो वह अपना उत्थान स्वयं कर सकता है। इसका ज्वलंत उदाहरण हैं मोहनदास करमचंद गांधी। मोहनदास करमचंद गांधी अफ्रीका जाने से पहले सामान्य आदमी थे, स्कूल में, कॉलेज में और लंदन में उनके भविष्य का कोई आशाप्रद नहीं मान सकता था। फिर शरीर से दुर्बल, स्वभाव से बहुत शर्मीले और सार्वजनिक सभा में बोलने में संकोचशील। पर इस शर्मीले और संकोचशील आदमी के मन में एक अद्‌भुत आदर्श धीरे-धीरे साकार होने लगा - मातृभूमि की आजादी का! और जैसे-जैसे यह आदर्श दृढ़ होता गया, वैसे-वैसे उनकी शक्ति और अधिक बढ़ती गई।

शरीर से दुर्बल होते हुए भी मीलों तक उन्होंने कूच किया और अगणित दिनों तक उपवास रखा, संकोच छोड़कर वह वायसराय और गवर्नर-जनरल से मिले, यही नहीं, बल्कि विशाल मानव-समुदाय के बीच खड़े होकर भाषण दिए। इस तरह प्राणों के समान प्रिय अपने आदर्श को मूर्तिमान किया।

जीवन-ध्येय से मनोबल, मनोबल से व्यक्तित्व और व्यक्तित्व से जीवन एवं समाज में शुभ परिवर्तन-यह क्रम गांधीजी के जीवन में प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। मन में आदर्श प्रकट होने पर जीवन में सहसा कैसा पलटा आता है, इतिहास में इसका उज्ज्वल दृष्टांत गांधीजी का जीवन है।

सच्चा आदर्श श्रेष्ठ (बढ़िया) और परलक्षी होता है। अपना नाम रौशन करना अथवा बहुत-सा धन एकत्र करना कोई आदर्श नहीं, वह तो स्वार्थ है। स्वजनों का रक्षण और पालन-पोषण इससे कुछ बढ़िया ध्येय अवश्य है; परंतु है वह भी संकुचित ही। वस्तुतः तो जिस मात्रा में मनुष्य स्वार्थ छोड़कर दूसरों के लिए जीता है, उसी मात्रा में उसका सच्चा व्यक्तित्व प्रस्फुटित होता है।

दूसरी ओर व्यक्ति स्वयं ही अपने को नीचे गिरा देना है इसका ज्वलंत उदाहरण के रूप मे हम लंकाधिपति रावण के जीवन को देख सकते हैं। सोने की लंका का राजा, प्रकांड विद्वान, महादेव का परम भक्त। पर उत्कट कामनावश उसका पतन हो गया। शायर ने ठीक ही कहा है:

उम्र भर मैं यही भूल करता रहा
धूल चेहरे पर थी मैं आईना साफ करता रहा।

मनुष्य को स्वयं पर ध्यान देना चाहिए। सारी शक्तियां उसके अंदर ही हैं। गीता में कुछ ऐसे सूत्र दिए गए हैं जिसे अपने जीवन में अपना कर हम उच्चतम शिखर पर पहुंच सकते हैं। सारा खेल मन का है। मन ही मन को गिरता है मन ही मन को उठाता है। गीता में इसी बात का उल्लेख मिलता है। गीता में कहा गया है जिसने अपने मन को जीत लिया मन उसका मित्र बन जाता है और जो ऐसा नहीं कर पाता मन के जैसा उसका कोई शत्रु नहीं हैं। किंतु यह इतना आसान नहीं है। श्लोक : ६:३५ में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को बताया है – हे महाबाहो इसमे संदेह नही कि मन चंचल है, इसको वश में करना अत्यंत कठिन है। किंतु हे कुंती पुत्र! यह अभ्यास और वैराग्य से वश में होता है। प्रश्न उठता है कि अभ्यास और वैराग्य क्या है? यह मन को दमन करने की बात नहीं है, मन को निर्मल करने की बात है। सर्वप्रथम तो किसी भी प्रकार के आसक्ति से दूर रहना है। उसका पहला कदम है जो कि गीता में भी कहा गया है (११:३५) **निमित्त मात्र भव सब्यसाचीन**। इसका तात्पर्य है की संपूर्ण विश्व भगवान की योजना के अनुसार चल रहा है। मनुष्य जो भी कर्म करें स्वयं को निमित्त समझकर करे। गीता (३.२७) में कहा गया है कि जो व्यक्ति यह समझकर कार्य करता है कि वह कर रहा है वह अहंकार से मोहित व्यक्ति हैं। गीता में स्पष्टकहा गया है **कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन** - तुम्हारा अधिकार केवल कर्म करने में है उसके फलों पर नहीं। अतएव फल की इच्छा मत करो, ना ही आकर्मण्यता की ओर झुको। यह निर्देश उन लोगों के लिए है जो यह समझते हैं कि अगर कर्म के फल के हम मालिक नहीं है तो कर्म हम क्यों करें? यहां स्पष्ट गीता में कहा गया है कि सभी को स्वधर्म के अनुसार कर्म करना आवश्यक है एवं कर्म किए बिना इस जगत में कोई नहीं रह सकता।

न हि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः।।

कोई भी मनुष्य एक क्षण के लिए अकर्मा नहीं रह सकता। वास्तव में सभी प्राणी प्रकृति द्वारा उत्पन्न तीन गुणों के अनुसार कर्म करने के लिए विवश होते हैं। तनाव मुक्त रहने के लिए गीता में (२.३८) में कहा गया है कि सुख-दुख लाभ और हानि, जय और पराजय को समान मानते हुए अपने कर्तव्य का निर्वाह करो। एक अन्य श्लोक (८.७) में कहते हैं **'मामनुस्मर युध्य च'**। मेरा स्मरण करते हुए युद्ध करो अर्थात जीवन में जो भी कर्म एवं कर्तव्य का निर्वाह करना है मेरा स्मरण करते हुए करो। श्लोक (१६.२१) में कहा गया है कि काम क्रोध और लोभ नरक के द्वार हैं एवं मनुष्य का नाश करने वाले हैं। इन्हें त्याग देना चाहिए। श्लोक (१०.९) में कहा गया है कि **बोधयंत परस्परं** - एक दूसरे के जीवन को महान बनाने के लिए आपस में ज्ञान, एक दूसरे के साथ महिमा की चर्चा करके एक दूसरे के जीवन का उत्थान करें। श्लोक ५.२५ में **'स्वभूत हिते रता'** की बात कही गई है। सब प्राणियों के हित साधन हमें करना है। श्लोक ४.३९ में कहा गया है कि **'श्रद्धावान लभते ज्ञानम तत्परः संयत इंद्रिय'**। जो संयमी है एवं विश्वास से भरे हैं वे ज्ञान अर्जित कर लेते हैं। श्लोक ४.४० में कहा गया है कि अज्ञानी, अश्रद्धालु

और संशयी व्यक्ति का विनाश हो जाता है। हमें इन तीनों बातों पर ध्यान रखना चाहिए। जिस व्यक्ति का स्वयं पर विश्वास नहीं है वह व्यक्ति कभी आगे नहीं बढ़ सकता। इसलिए आत्मबल और आत्मविश्वास मनुष्य के बहुत बड़ी शक्ति होती हैं। श्लोक ९.३० एवं ९.३१ में भगवान ने यह संदेश दिया है कि अगर कोई दुराचारी से दुराचारी भी अनन्य भाव से मेरा भक्त होकर मुझे भजता है तो वह तत्काल धर्मात्मा हो जाता है और निरंतर रहने वाली शांति को प्राप्त करता है। यह निश्चय पूर्वक सत्य है कि वह मेरा भक्त कभी नष्ट नहीं होता। यहां एक अत्यंत महत्वपूर्ण बात गीता में कही गई है कि कभी भी जीवन के किसी भी मोड़ पर आप अपने जीवन को बदलने के लिए कदम उठा सकते हैं। यह बात इस ओर इंगित करता है कि जो बीत गई सो बीत गई। लेकिन अगर आगे को आपको सुधारना है तो जिस क्षण आप चाहेंगे, जिस क्षण आप संकल्पित होंगे, उसी क्षण से आप अपने जीवन में सुधार ला सकते हैं।

गीता (९.२२) मे भगवान ने कहा है :-

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।

भावार्थ : जो भक्तजन मुझ परमेश्वर को निरंतर चिंतन करते हुए अनन्य भाव से भजते हैं, उन नित्य-निरंतर मेरा चिंतन करने वाले पुरुषों का योगक्षेम (प्राप्ति का नाम 'योग' है और प्राप्ति के निमित्त किए हुए साधन की रक्षा का नाम 'क्षेम' है) मैं स्वयं प्राप्त कर देता हूँ।

इस संदर्भ मे स्वामी विवेकानंद के इस वाणी को समझिए- 'एक विचार लो। उस विचार को अपना जीवन बना लो, उसके बारे में सोचो उसके सपने देखो, उस विचार को जियो। अपने मस्तिष्क, मांसपेशियों, नसों, शरीर के हर हिस्से को उस विचार में डूब जाने दो और बाकी सभी विचार को किनारे रख दो। यही सफल होने का तरीका है। "स्वामी जी ने अन्य भाव का बहुत ही सुंदर विस्तार कर किया है। हम आसानी से समझ सकते हैं। इसी भाव को अन्य रूप में इस प्रकार भी कहा गया है - अगर किसी चीज़ को दिल से चाहो तो पूरी कायनात उसे तुमसे मिलाने में लग जाती है।

भगवद्गीता की शुरुआत धृतराष्ट्र के प्रश्न से हुई। उन्हें अपने पुत्रों की विजय की आशा थी, जिन्हें भीष्म, द्रोण और कर्ण जैसे महान योद्धाओं की सहायता प्राप्त थी। उन्हें आशा थी कि विजय उनकी ओर होगी। लेकिन युद्ध के मैदान के दृश्य का वर्णन करने के बाद, संजय ने राजा से कहा (१८.७८), "आप विजय के बारे में सोच रहे हैं, लेकिन मेरा मत है कि जहाँ कृष्ण और अर्जुन मौजूद हैं, वहाँ सब कुछ अच्छा होगा।"

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मितर्मम्।।

जहाँ भी समस्त योगियों के स्वामी कृष्ण हैं, तथा जहाँ भी श्रेष्ठ धनुर्धर अर्जुन हैं, वहाँ निश्चित रूप से ऐश्वर्य, विजय, असाधारण शक्ति और नीति होगी। ऐसा मेरा मत है।

इस श्लोक की व्याख्या करते हुए देश के जाने-माने संत गोविंद देव गिरी जी महाराज ने कहा कि यहां श्री कृष्ण का तात्पर्य है सतोगुण में लगे हुए विवेक से है एवं अर्जुन का तात्पर्य है यहां पर शत प्रतिशत प्रयास से हैं। अर्थात जब हमारे लक्ष्य विशुद्ध होंगे और प्रयास शत प्रतिशत होंगे तो सफलता हमारा कदम चूमेगी।

चिट्ठी आई है

"सम्मेलन क्या करता है?"

अक्सर यह सवाल पूछा जाता है।
"आखिर सम्मेलन करता क्या है?"
और मैं कहना चाहूँगा–
इसका उत्तर जितना सरल है, उतना ही गहरा भी है।
सम्मेलन केवल एक कार्य करता है–
समाज को जोड़ता है। व्यक्तियों को संगठित करता है।
और उन्हें देता है,
एक सशक्त, समर्पित और समर्थ मंच!
यह सम्मेलन किसी एक व्यक्ति, एक गुट, या
एक क्षेत्र की बात नहीं करता।
यह सम्मेलन 'मैं' से 'हम' की यात्रा है।
यह सम्मेलन 'एकल प्रयास' को
'सामूहिक संकल्प' में बदलने की परंपरा है।
जब दो हाथ सम्मेलन के माध्यम से जुड़ते हैं,
तो वे दो हाथ नहीं रहते।
वे बन जाते हैं हज़ारों हाथों की सामूहिक शक्ति!
और फिर...
जिस कार्य को कभी दो हाथों से किया जाता था,
वही कार्य जब हजारों हाथों से किया जाता है,
तो वह केवल एक व्यक्ति का नहीं,
पूरे समाज का कार्य बन जाता है।
यही है सम्मेलन की आत्मा।
यह संगठन है, लेकिन केवल ढाँचा नहीं, भावना है।
यह आंदोलन है लेकिन केवल प्रदर्शन नहीं, परिवर्तन है।
यह मंच है लेकिन केवल भाषण नहीं, समर्पण है।
सम्मेलन हमसे है, और हम सम्मेलन से।
जिस दिन.हर कोई यह समझ लेगा,
उसी दिन..हमारा समाज सशक्त भी होगा,
संगठित भी होगा और स्वाभिमानी भी होगा।
जय सम्मेलन....जय समाज

राज कुमार सराफ, असम

"समाज विकास" पत्रिका – मई २०२५ अंक पर मेरे विचार एवं हृदयतल से आभार

"समाज विकास" पत्रिका का मई २०२५ अंक पढ़ना मेरे लिए न केवल एक बौद्धिक अनुभव रहा, अपितु यह आत्मा को स्पर्श करने वाली एक यात्रा सिद्ध हुई। यह अंक केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि सामाजिक नवचेतना, सांस्कृतिक गौरव और सामूहिक उत्तरदायित्व का सजीव दस्तावेज है, जो हर संवेदनशील मन को झकझोरता है और विचारों को नव दिशा देता है।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय,

आपके सशक्त नेतृत्व एवं दूरदर्शी सोच ने **"समाज विकास"** को एक आदर्श मंच में परिवर्तित कर दिया है, जो समाज में विचार, संवाद और संवेदना के स्तर पर नूतन ऊर्जाओं का संचार कर रहा है। यह पत्रिका अब केवल पठन का माध्यम नहीं, अपितु एक सजीव आंदोलन बन चुकी हैं।

मेरे लिए यह अत्यंत हर्ष, गर्व एवं भावुकता का क्षण रहा जब आपने मेरी विनम्र चिट्ठी को स्थान देकर उसे गरिमा प्रदान की।

आपका नेतृत्व सदैव ऐसे ही समाज निर्माण के यज्ञ में प्रेरणा का स्तम्भ बना रहे – ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है।

"मनीष बाजोरिया", इंदौर

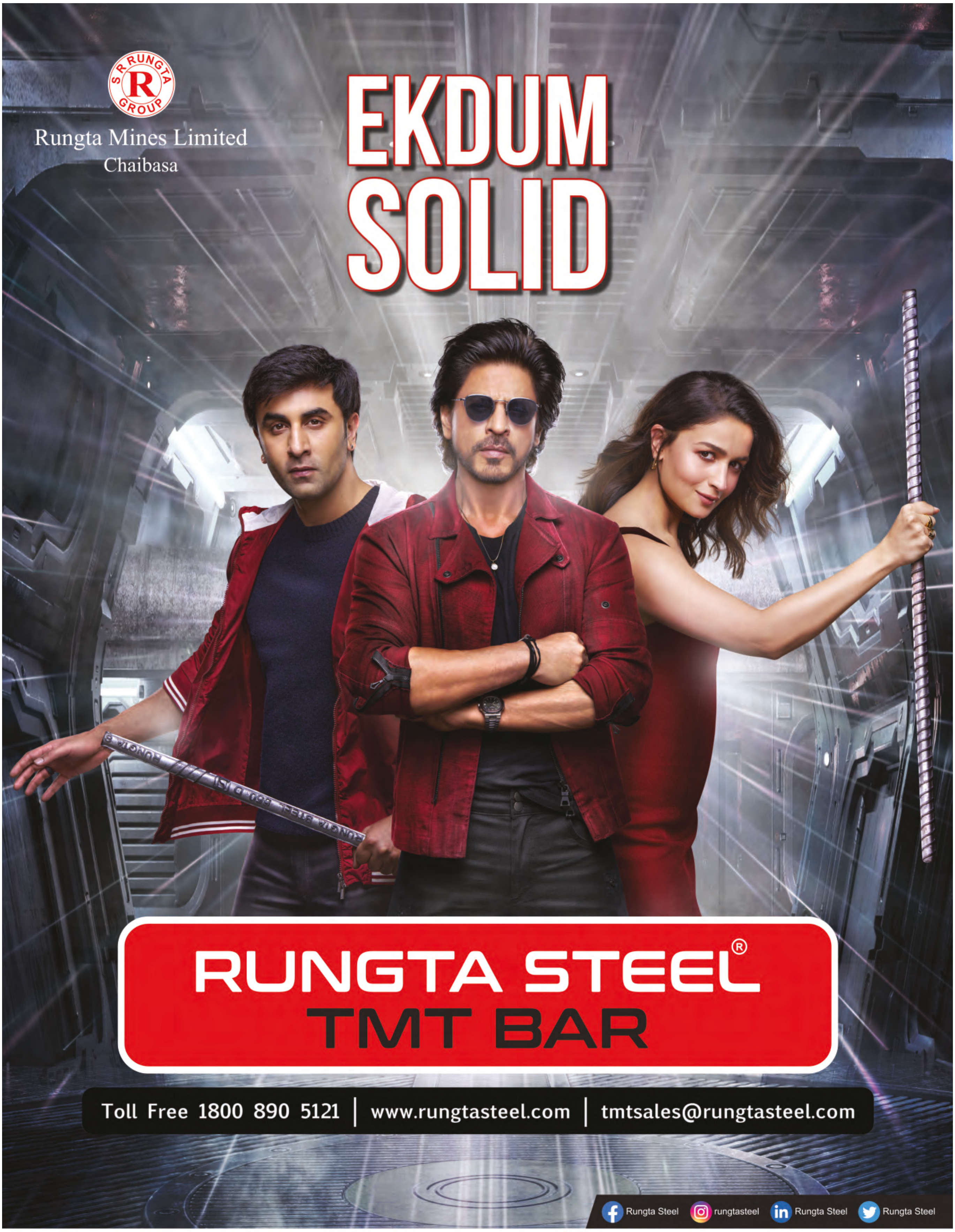

Rungta Office, Nagpur Parishad Complex, Chaibasa, Jharkhand-833201

पवन जी को शुभकामनाएँ

आपणी बात

राम राम।

पिछले दिनों प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी राजस्थान के देशनोक पालना में पधारे थे। वहां पर आयोजित जनसभा का शंखनाद उन्होंने **"था सगला नै राम-राम"** से किया था। वहां उपस्थित जन समुदाय ने इसका प्रति उत्तर उत्साह एवं जोश के साथ दिया था। इस प्रकार हम समझ सकते है कि **'राम-राम'** हमारे संस्कार संस्कृति का अभिन्न अंग है। इस अवसर पर मैं आप सभी से अनुरोध करूंगा कि इस संबोधन को आप अपने जीवन में एवं वार्तालाप में अपनायें।

जैसा कि हम सब जानते हैं गत २७ अप्रैल २०२५ को कानपुर में आयोजित राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक में आगामी सत्र के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव की प्रक्रिया प्रारंभ करने का निर्णय लिया गया था। उसी के तहत संविधान के प्रावधान के अनुसार सभी प्रांतो से राष्ट्रीय अध्यक्ष के लिए उपयुक्त व्यक्ति के चुनाव के लिए सुझाव/अनुशंसा आमंत्रित की गई थी। तदानुपरांत सभी १८ प्रांतो ने दिल्ली के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पवन गोयनका के नाम की अनुशंसा की है। इस प्रकार श्री पवन गोयनका आगामी सत्र के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष के लिए एकमात्र उम्मीदवार घोषित किये गए हैं। श्री गोयनका के सुझाव पर आगामी अखिल भारतीय समिति की बैठक २० जुलाई २०२५ को रायपुर में आयोजित की गई है जिसमें उनके निर्वाचन की प्रक्रिया संपूर्ण हो जाएगी। मैं श्री पवन गोयनका के इस निर्विरोध चुनाव पर उन्हें अपनी हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूं। श्री गोयनका यह लोकप्रियता का ही परिणाम है, जिसके कारण सभी प्रांतो ने एक स्वर में उनके नाम का प्रस्ताव किया है। श्री गोयनका सम्मेलन के पुराने कार्यकर्ता हैं। देश की राजधानी दिल्ली में उन्होंने प्रथम से ही सम्मेलन को पुष्पित पल्लवित करने में अप्रतिम भूमिका निभाई है। साथ ही राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के रूप में भी सम्मेलन को अपनी सेवाएं प्रदान की है। अंतराष्ट्रीय स्तर पर भी उनकी पैठ है। वे एक सुलझे हुए सकारात्मक विचारों के धनी व्यक्ति हैं। हाल ही में उन्होंने अमृतसर में भी समाज बंधुओ से मिलकर सम्मेलन के संगठन विस्तार के लिए एक सबल प्रयास किया था। बिना किसी शंका के यह कहा जा सकता है कि उनके अनुभवों से सम्मेलन लाभान्वित होगा। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि उनके नेतृत्व में सम्मेलन नहीं ऊंचाइया प्राप्त करेगा। एक बार फिर से उन्हें शुभकामनाएं। उनके प्रति मैं अपनी भावनाएं निम्नलिखित पंक्तियों में व्यक्त करता हूं:

लक्ष दृष्टिगत हो सदा, कर्म करें दिन-रात
मन में हो विश्वास दृढ, होगा नया प्रभात।

अक्सर जब कोई भी खिलाड़ी किसी दौड़ में भाग लेता है तो बेहतर नतीजे के लिए दौड़ के अंतिम चरण में अपनी गति बढ़ाने में पूरा जोर लगा देता है। मई एवं जून महीना गतिविधियों से भरा हुआ था। कार्यकारिणी समिति की बैठक के पश्चात उत्तर प्रदेश के विभिन्न शहरों में समाज बंधुओ के साथ बैठक हुई। इसकी विस्तृत रिपोर्ट समाज विकास के मई अंक मे प्रकाशित हो चुकी है। खुशी की बात है कि भदोही में नई शाखा खुलने की प्रक्रिया पूर्ण होने जा रही है। लखनऊ में भी सफलता मिलने की पूरी संभावना है। तत्पश्चात जून महीने में मध्य प्रदेश के मुख्य एवं देश के सर्वाधिक स्वच्छ शहर इंदौर में शाखा का शुभारंभ मेरे लिए एक मनोकामना पूर्ण होने के समान रही है। इसकी पृष्ठभूमि पिछले १ वर्ष से लिखी जा रही थी। इसमे मेरे प्रिय मित्र मधु कुमार सराफ (अब दिवंगत), श्री बनवारी लाल जाजोदिया एवं कटनी के श्री शरद सरावगी का मुख्य योगदान रहा है। फिर भी अनेक असुविधाओं से ऊपर उठते हुए यह संतोष की बात है कि शाखा की बागडोर कर्मठ हाथों में है। तत्पश्चात इंदौर शाखा के अध्यक्ष श्री राजेश थरड़ मित्तल के संदर्भ से ही हम उज्जैन के समाज बंधुओ से मिले। वहां पर भी जल्द ही शाखा शुभारंभ होने का आश्वासन मिला है।

मई महीने के अंतिम सप्ताह में कोलकाता में देश के लोकप्रिय अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अनुप्रेरक एवं बिजनेस कोच डॉक्टर उज्ज्वल पाटनी का एक कार्यक्रम स्थानीय जीडी बिरला सभागार में आयोजित हुआ। विषय था गेम चेंजर मारवाड़ियों के घर एवं व्यापार में सफल होने के नए नियम। इस कार्यक्रम के प्रवेश पत्र की बहुत मांग थी। कॉपीराइट की बाधा के कारण इसका ऑनलाइन प्रसारण नहीं हो सका। इस कार्यक्रम की अहमियत इस बात से आंकी जा सकती है कि इसके प्रवेश पत्र को सभी दर्शकों ने सम्मेलन कार्यालय से स्वयं संग्रह किया। कार्यक्रम के तीन दिन पहले ही नए प्रवेश पत्र देना बंद कर दिया गया, ताकि सभागार में स्थानाभाव की समस्या खड़ी ना हो जाए। जहां तक मेरी स्मृति साथ देती है ऐसा पहले सन् २०१० में हुआ था जब तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल सम्मेलन कार्यक्रम में भाग लेने पधारी थी। पूरे डेढ़ सौ मिनट तक डॉक्टर उज्ज्वल पाटनी ने पूरे सभागार को मंत्र मुग्ध करके रखा। सम्मेलन के लिए यह एक अत्यंत ही सफल कार्यक्रम सिद्ध हुआ एवं सम्मेलन की छवि बनाने में सहायक सिद्ध हुई। इस कार्यक्रम के दौरान सम्मेलन के विषय में एक संक्षिप्त जानकारी के साथ एक पॉकेट पुस्तिका भी प्रकाशित गई जिसे सभी श्रोताओं में बांटी गई।

कई प्रांतो में नये प्रांतीय अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं। शीघ्र ही वे अपना पदभार ग्रहण करेंगे। सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। मध्य प्रदेश से निर्वाचित हुए हैं श्री शरद सरावगी। पिछले १ वर्ष में श्री शरद सरावगी ने मध्य प्रदेश में शाखाएं एवं संगठन को मजबूत करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि उनके कार्यकाल में मध्य प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन एक नया इतिहास रचेगा।

जून महीने के प्रारंभ में मायड़ भाषा सीखने के लिए एक कार्यक्रम की भूमिका बनी। परिकल्पना को साकार किया कोलकाता के उद्योगपति श्री तपन गाड़ोदिया एवं एक विदुषी भद्र महिला डॉक्टर श्रीमती पिंकी सेखानी, जिन्होंने आगे आकर निशुल्क अपनी सेवाएं प्रदान कर हमारा उत्साह बढ़ाया। खुशी की बात यह है की प्रथम से ही अनेक शहरों के बच्चे इस कार्यक्रम से जुड़े। इस तरह के कार्यक्रम हमारे संस्कार संस्कृति का भी संवर्धन करते हैं। ऐसा प्रयास कुछ वर्षों पहले हमारे पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया ने किया था। इस कार्यक्रम की सभी समाज बंधुओ से सराहना प्राप्त हुई हैं।

आपणो समाज-एक समाज-श्रेष्ठ समाज।

शिव कुमार लोहिया

स्वार्थी तत्वों द्वारा मारवाड़ी समाज को तोड़ने के कुत्सित प्रयास की सम्मेलन के वरिष्ठों द्वारा निन्दा

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की सत्र २०२३-२५ की सलाहकार उपसमिति की बैठक बृहस्पतिवार, १९ जून २०२५ को सम्मेलन सभागार, डकबैक हाउस, में एवं ऑनलाईन जूम (Zoom) द्वारा पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सलाहकार उपसमिति के चेयरमैन श्री सीताराम शर्मा की सभापतित्व में आयोजित की गई।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन (All India Marwari Federation) समग्र मारवाड़ी समाज की सबसे पुरानी सामाजिक संस्था है, जिसकी स्थापना २५ दिसंबर १९३५ को कोलकाता में हुई थी। इसकी स्थापना में मुख्य भूमिका निभाने वाले सम्मेलन के प्राण पुरुष स्व. ईश्वर दास जालान स्वतंत्र भारत में पश्चिम बंगाल सरकार में मंत्री एवं विधानसभा अध्यक्ष रहें। ब्रिटिश काल में सम्मेलन की स्थापना का मुख्य उद्देश्य मारवाड़ियों को राजनैतिक अधिकार दिलाने के साथ-साथ समाज सुधार एवं समाज विकास रहा है। सम्मेलन के लक्ष्य अपने संस्कारों को अक्षुण्ण रखते हुए समयकाल के अनुसार मुख्य धारा के साथ चलना है। बाल विवाह, पर्दा प्रथा, दहेज जैसी कुरीतियों का सम्मेलन के प्रयास से समूल उन्मूलन संभव हुआ है। विधवा-विवाह, बालिकाओं की शिक्षा तथा समाज में उच्च शिक्षा के प्रयास भी सम्मेलन के स्तर से सफल हुए हैं। आज उच्च जीवनयापन की विधा के हर क्षेत्र में मारवाड़ी समाज की पकड़ है। भारत के कई माननीय राष्ट्रपतियों उपराष्ट्रपतियों, लोकसभा स्पीकर, कई राज्यों के राज्यपालों ने हमारे कार्यक्रमों में बतौर उद्घाटनकर्ता या मुख्य अतिथि पधार कर हमें कृतार्थ किया है। इससे सम्मेलन सम्मानित एवं गौरवान्वित हुआ है। वर्तमान में भारत के पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, ओडिशा, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, गुजरात, दिल्ली, उत्तराखंड, तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, केरल, सिक्किम, उत्तर प्रदेश सहित पूर्वोत्तर के अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, त्रिपुरा, असम, नागालैंड तथा पंजाब में प्रांतीय इकाईयों तथा करीब ४०० शाखाओं के माध्यम से समाज-सुधार, समाज सेवा एवं समाज विकास के कार्य संपादित हो रहे हैं।

देखा जा रहा है कि समाज के कुछ स्वार्थी लोग निजी स्वार्थवश **सम्मेलन के मिलते-जुलते नाम** से संस्था खोलकर लोगों को भ्रमित कर रहें हैं या प्रयास कर रहे हैं। यह समाज को बांटने का कुत्सित प्रयास है, जबकि हकीकत यह है कि ऐसे लोग समाज हित में नहीं, समाज के विरोध में लगते हैं। कई तो सम्मेलन से निष्कासित भी हैं। ईर्ष्या, द्वेष और स्वार्थ के वशीभूत होकर ऐसे कुत्सित प्रयासों की सम्मेलन भरपूर निंदा करता है।

इस संबंध में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की शीर्ष सलाहकार समिति की आवश्यक बैठक समिति के चेयरमैन तथा पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा की अध्यक्षता में हुई जिसमें ऐसी हरकत करने वालों को समाज विरोधी करार देते हुए उनकी भर्त्सना की गई। बैठक में समिति के संयोजक श्री आत्माराम सोंथलिया, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिव कुमार लोहिया, राष्ट्रीय महामंत्री श्री कैलाशपति तोदी, आगामी निर्वाचित अध्यक्ष श्री पवन गोयनका, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण श्री नन्द लाल रुँगटा, डॉ. हरि प्रसाद कानोड़िया, श्री राम अवतार पोद्दार, पद्मश्री प्रह्लाद राय अगरवाला, श्री संतोष सराफ, श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री, श्री भानीराम सुरेका, एवं श्री संजय हरलालका, उपस्थित थे।

बैठक में सर्व सम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया कि समाज को तोड़ने वालों के ऐसे किसी भी कुत्सित प्रयासों की सम्मेलन न सिर्फ निंदा करता है बल्कि आवश्यकतानुसार विधि विशेषज्ञों से सलाह लेकर आवश्यक कानुनी कार्यवाही तथा अनुशासनात्मक कदम उठाये जायेंगे। साथ ही समग्र मारवाड़ी समाज से संगठित रहने, ऐसे घृणित प्रयासों को रोकने हेतु प्रयास करने, निंदा, अवहेलना तथा बहिष्कार करने के आह्वान तथा समाज को ऐसे तत्वों से सचेत रहने का अनुरोध किया गया।

सम्मेलन समाचार

सम्मेलन द्वारा मायड़ भाषा कक्षा शुरू

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा मायण भाषा सीखने के लिए **'आओ मायड़ भाषा सीखा'** कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। प्रयास का मुख्य उद्देश्य है मारवाड़ी सुनने एवं बोलने की क्षमता विकसित करना, मारवाड़ी पहचान एवं संस्कृति पर गर्व करना, कहानियां, खेल, गीत एवं कला के जरिए आनंददायक शिक्षा देना। इस कार्यक्रम के जरिए परिवार, घर, रंग, जानवर, संख्याएं, पारंपरिक पोशाक एवं आभूषण, व्यापार एवं पैसे की बातचीत के विषय में जानकारी दी जाएगी। कक्षाएं प्रत्यक्ष एवं जूम पर आयोजित होगी। निर्देशक तपन गाड़ोदिया एवं शिक्षक के रूप में डॉ. पिंकी सेखानी अपनी सेवाएं प्रदान कर रही हैं। कार्यक्रम की प्रारंभ में ही देश के अनेक शहरों से शिक्षार्थी ने भाग लिया। उद्घाटन समारोह के अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष शिवकुमार लोहिया, राष्ट्रीय महामंत्री कैलाशपति तोदी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष केदारनाथ गुप्ता, राष्ट्रीय संयुक्त मंत्रीद्वय संजय गोयनका एवं पवन जालान, डॉ. विजय केजरीवाल, अनिल मलावत एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

श्री तपन गाड़ोदिया

कार्यक्रम निर्देशक

कोलकाता में जन्मे **श्री तपन गाड़ोदिया** ने कंप्यूटर विज्ञान एवं तकनीक एवं एम बी ए की शिक्षा प्राप्त की। वे एक उद्योगपति हैं। उनके उत्पाद ५० देश में निर्यात होते हैं। सामाजिक क्षेत्र में कई संस्थाओं के सदस्य हैं। वे २३ साल तक हुए चीन में रहे और वहां के शंघाई स्थित इंडिया चीन क्लब के सक्रिय सदस्य के रूप में अपनी भूमिका निभाई और ५ साल तक लगातार मानद सचिव के रूप में काम किया। उनके पिताजी श्री प्रकाश चंद गाड़ोदिया १० वर्ष तक इंडियन ट्रांसफॉर्मर मैन्युफैक्चरर एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे।

कार्यक्रम का विवरणिका

शुभारंभ – शनिवार, ७ जून २०२५, सायं ५ बजे
(All India Marwari Foundation) अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
बोलचाल की मारवाड़ी भाषा कक्षा का आयोजन किया जा रहा है
१० वर्ष और उससे ऊपर के बच्चों के लिए किसी भी उम्र के वयस्कों के लिए।
स्थान (प्रत्यक्ष कक्षा):
डकबैक हाउस, चौथी मंजिल, थिएटर रोड (कला मंदिर के सामने)
हर शनिवार, शाम ५ बजे से ६ बजे तक
ऑनलाइन (zoom लिंक के माध्यम से) भी उपलब्ध हैं।

मासिक शुल्क:

बच्चों के लिए ₹ १००
वयस्कों के लिए ₹ ३००
श्री टी. के. गाड़ोदिया - कार्यक्रम निर्देशक
श्रीमती पिंकी सेखानी – प्रधान शिक्षिका

मुख्य उद्देश्य:

मारवाड़ी सुनने और बोलने की क्षमता विकसित करना
मारवाड़ी पहचान और संस्कृति पर गर्व महसूस कराना
कहानियाँ, गीत, खेल व कला के ज़रिये आनंददायक शिक्षा देना

तीन महीने का पाठ्यक्रम:

परिचय और अभिवादन	रोज़मर्रा की बातचीत
परिवार और घर	पारंपरिक पोशाक और आभूषण
संख्याएँ, रंग और जानवर	व्यापार और पैसे की बातचीत
दिन, भोजन और त्योहार	शोकेस डे और प्रमाण पत्र वितरण

मारवाड़ी क्यों सीखें?

मारवाड़ी भाषा सीखना न केवल एक नई भाषा सीखने जैसा है, बल्कि यह हमें हमारी जड़ों और संस्कृति से भी जोड़ता है। साथ ही, यह हमारी उद्यमिता (Entrepreneurship) की क्षमता को भी मजबूत करता है।
आइए, अपनी मातृभाषा को फिर से जीवंत करें – बच्चों और बड़ों, सभी के लिए एक सुनहरा अवसर!
अधिक जानकारी एवं कार्यक्रम से जुड़ने के लिए संपर्क करें:
दूरभाष - +918697317557
ईमेल - aimf1935@gmail.com

बदलते परिवेश में २५ मई की परिवार एवं व्यवसाय में सफलता का सूत्र विषयक संगोष्ठी पर प्रतिक्रियाएं

शिव रतन फोगला जी ने कहा की उज्ज्वल पाटनी जी का कार्यक्रम मुझे बहुत अच्छा लगा और मैंने प्रत्यक्ष पहली बार उज्ज्वल पाट नी जी को सुना है सुनकर बहुत अच्छा लगा और उज्ज्वल जी ग्राउंड लेवल से जुड़कर बोलते हैं और बहुत अच्छा मोटिवेट करते हैं और कोई भी आदमी इससे अच्छी शिक्षा ले सकता है और आगे बढ़ सकता है अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन को बहुत बहुत धन्यवाद।

नीलू सेठिया जी ने कहा उज्ज्वल पाटनी जी का कार्यक्रम देखकर बहुत अच्छा लगा बहुत कुछ सीखने मिला कि आदमी कैसे अपने जीवन में आगे बढ़ सकता है उन्नति कर सकता है।

ओडिशा से आयें संजय अग्रवाल जी ने बोला की हम ६ लोग जो ओडिशा से आयें है हम सबको उज्ज्वल पाटनी जी का कार्यक्रम बहुत अच्छा लगा और कहा की ऐसा कार्यक्रम हर शहर में होना चाहिए मारवाड़ी समाज के तरफ से।

नरेश तमाकूवाला ने कहा की मैं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित उज्ज्वल पाटनी जी के कार्यक्रम की प्रशंसा करता हूँ। इस कार्यक्रम से नयी पीढ़ी को अच्छी प्रेरणा मिलेगी।

राम अवतार धूत जी ने कहा की यह प्री वेडिंग शूट नहीं होना चाहिए सीमित मेल-जोल होना चाहिए जैसे पहले होता था आजकल लोग सीमायें लांघ रहे हैं और शादी विवाह में मद्यपान भी नहीं होना चाहिए यह दोनों कुरीतियों के लिए समाज को लड़ना है और तैयार होना है।

श्याम बजाज जी ने कहा की मैंने पाटनी जी को पहले भी सुना है पाटनी जी बहुत मोटिवेट करते है हम लोग को और मैं आशा करता हूँ की आज के कार्यक्रम से बच्चे लोग डेवलप करेंगे।

विनीत जैन जी ने कहा अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन काफी अच्छी संस्था है काफी अच्छे अच्छे काम कर रही है। संस्था और आज की युवा पीढ़ी को जोड़ने के लिए जो पाटनी जी का कार्यक्रम किया है संस्था ने, वह बहुत ही सराहनीय है।

शंकर कारीवाल जी ने कहा उज्ज्वल पाटनी जी का कार्यक्रम बहुत ही मजेदार था और एनर्जेटिक था और ऐसे कार्यक्रम अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा होते रहने चाहिए जिससे समाज का उनके व्यापार का एवं उनके परिवार का उत्थान हो।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
4बी, डकबैक हाउस (चौथा तल्ला)
41, शेक्सपियर सारणी, कोलकाता-700 017

समाज से सादर निवेदन

वैवाहिक अवसर पर मद्यपान करना - कराना धार्मिक एवं सामाजिक दोनों रूप से उचित नहीं है।

प्री-वेडिंग शूट
हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के खिलाफ है।

समाजहित में इनसे परहेज करें।

निमंत्रण में ई-कार्ड को बढ़ावा दें।

तमिलनाडु प्रांत द्वारा राष्ट्रीय महामंत्री का सम्मान

दिनांकः १३ जून २०२५ को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री कैलाशपति तोदी के तमिलनाडू आगमन पर डी.जी. वैष्णव कॉलेज, बोर्ड रूम में तमिलनाडु मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा एक गरिमामयी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें श्री कैलाशपति जी तोदी की उनके सामाजिक एवं संगठनात्मक योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

सम्मान समारोह की शुरुआत गायत्री मंत्र से हुई। उसके बाद हाल ही में गुजरात प्रदेश के अहमदाबाद से लंदन जाने वाले एयर इंडिया के विमान का भयावह तरीके से दुर्घटनाग्रस्त हो जाने पर सभा में उन दिवंगत आत्माओं की शांति हेतु १ मिनट का मौन रखा गया। उसके उपरांत राष्ट्रीय महामंत्री श्री कैलाशपति तोदी ने सभी सदस्यों को अभिवादन किया। सभा को संबोधित करते हुए श्री तोदी ने सम्मेलन के विस्तार हेतु कार्यक्रमों शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, व्यवसाय तथा सामाजिक सुरक्षा के बारे में राष्ट्र के द्वारा किए जा रहे महत्वपूर्ण कार्यों के बारे में सभा में उपस्थित समाज--बंधुओं को अवगत कराते हुए लोगों को सम्मेलन के साथ जुड़ने एवं सम्मेलन के साथ मिलकर कार्य करने का आह्वान किया।

इस विशेष अवसर की अध्यक्षता तमिलनाडु मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री अशोक जी केडिया ने की। उन्होंने सभी उपस्थित सदस्यों का हार्दिक स्वागत करते हुए श्री तोती के योगदान को सराहा और सम्मेलन की एकता और सक्रियता की भावना पर बल दिया।

सम्मेलन के महासचिव मोहनलाल बजाज ने सम्मेलन की विभिन्न गतिविधियों और समाज के हित में किए जा रहे कार्यों की संक्षिप्त जानकारी दी, जिससे उपस्थित सदस्यों को संगठन की दिशा और दृष्टि से अवगत कराया गया।

कार्यक्रम का समापन श्री अजय नाहर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिन्होंने सभी गणमान्य अतिथियों और सदस्यों की उपस्थिति के लिए आभार व्यक्त किया।

यह कार्यक्रम सम्मेलन की एकजुटता, समाज सेवा और नेतृत्व क्षमता का प्रतीक बनकर सामने आया।

समारोह में श्री अशोक जी मुंधड़ा, श्री विजय गोयल, श्री अशोक लखोटिया, श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, श्री मुरारीलाल सौंथलिया, श्री महावीर मर्दा, श्री गोविन्द अग्रवाल, श्री कृष्ण कुमार नथानी, श्री गोपाल अग्रवाल, श्री गौरीशंकर राठी, श्री नवीन अग्रवाल, श्री आदित्य मोहता, श्री संजीव अग्रवाल, श्री अजय नाहर, श्री अनुराग माहेश्वरी ने उपस्थिति दर्ज कराई।

उपलब्धियाँ

नवगछिया की सांची सर्राफ

नवगछिया के प्रसिद्ध समाजसेवी व पथप्रदर्शक पूज्य स्व० रामावतार प्रसाद सर्राफ जी के सुपुत्र आनन्द प्रकाश, पटना की सुपुत्री सॉची सर्राफ को हार्वर्ड बिजनेस स्कूल, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी, अमेरिका द्वारा सुप्रतिष्ठित "बेकर स्कौलर एवार्ड एवं हाई डिस्टेंसन अवार्ड" (सर्वोच्च शैक्षणिक उपलब्धि पुरस्कार) से सम्मानित किया गया है। हार्दिक बधाई।

सक्षम जिन्दल ने जेईई एडवांस्ड में ऑल इंडिया लेवल पर दूसरी रैंक हासिल की है। सक्षम के पिता उमेश जिंदल पैथोलोजिस्ट हैं हिसार मे अपनी लैब चलाते हैं। माता अनीता जिंदल फिजियोथेरेपिस्ट हैं। हार्दिक बधाई।

श्री सुरेश रुंगटा, बिहार राज्य उद्योग एवं व्यवसायिक आयोग के अध्यक्ष बने हैं। हार्दिक बधाई।

खगड़िया निवासी श्री कैलाश अग्रवाल और श्रीमती डॉली खेरिया के सुपुत्र प्रशिक्षु डीएसपी श्री पौरुष अग्रवाल जिन्हें बिहार पुलिस अकादमी के राजगीर में आयोजित दीक्षांत समारोह के दौरान सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए मुख्यमंत्री के पिस्टल रैतिक बैटन और ट्रॉफी से सम्मानित किया गया, हार्दिक बधाई!

खारूपेटिया एवं नवीन शाखा मंगलदै का शपथ ग्रहण संपन्न

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के खारूपेटीया शाखा एवं नवीन शाखा मंगलदै शाखा का संयुक्त रूप से एक ही मंच पर शपथ ग्रहण समारोह खारूपेटिया स्थित श्री हनुमान मारवाड़ी धर्मशाला के मुख्य सभागार में सम्पन्न हुआ। स्थानीय शाखा के निवर्तमान अध्यक्ष पवन पोद्दार की अध्यक्षता में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में मुख्य अतिथि व प्रांतीय अध्यक्ष कैलाश काबरा, विशिष्ट अतिथि प्रांतीय महामंत्री रमेश कुमार चांडक प्रांतीय संगठन मंत्री मनोज कुमार काला, हनुमान मंदिर के अध्यक्ष श्रीभगवान अग्रवाल, पूर्व अध्यक्ष अशोक नागोरी, मारवाड़ी युवा मंच खारूपेटीया शाखा के अध्यक्ष सुमित पांड्या, युवा रजत शाखा अध्यक्ष मुश्री मुस्कान रणवीर भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम में स्थानीय शाखा अध्यक्ष पवन पोद्दार को प्रांतीय अध्यक्ष कैलाश काबरा ने शपथ पाठ करवाया। प्रांतीय महामंत्री रमेश कुमार चांडक ने शाखा पदाधिकारियों को एवं प्रांतीय संगठन मंत्री मनोज काला ने शाखा के अन्य कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ पाठ करवाया। इस शुभ अवसर पर १० नए आजीवन सदस्यों को अशोक नागौरी ने शपथ पाठ करवा कर खारूपेटीया शाखा परिवार से जोड़ा। सभी पदाधिकारियों का प्रांत की ओर से फुलाम गामोछा ओढ़ाकर अभिनंदन किया गया। इसके बाद नवगठित शाखा मंगलदै शाखा खोलने के लिए खारूपेटिया अध्यक्ष पवन पोद्दार ने प्रांत से अनुरोध किया।

प्रांतीय अध्यक्ष द्वारा मंगलदै शाखा के संस्थापक अध्यक्ष कैलाश पटवारी को तथा प्रांतीय महामंत्री रमेश कुमार चांडक ने संस्थापक सचिव प्रबिन अग्रवाल एवं अन्य पदाधिकारियों को शपथ पाठ करवाकर शाखा का विधिवत शुभारंभ किया। प्रांत की ओर से खारूपेटिया प्रेस क्लब के अध्यक्ष दैनिक पूर्वोदय एवं डिवाई ३६५ एवं महत्वपूर्ण सेवा दे रहे श्रवण झा के प्रांतीय अध्यक्ष की ओर से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अगले चरण में दोनों शाखाओं के नव नियुक्त अध्यक्ष के संबोधन के पश्चात अशोक नागोरी, श्रीभगवान अग्रवाल तथा प्रांतीय पदाधिकारियों ने अपने संबोधन में नए पदाधिकारियों को तथा नवीन शाखा मंगलदै खुलने पर हार्दिक बधाई दी। प्रांतीय अध्यक्ष कैलाश काबरा ने कहा कि जब हम असम आए थे, तो हर मारवाड़ी बन कर आए थे। लेकिन आज हम अग्रवाल, माहेश्वरी, जैन ब्राह्मण इत्यादि जातियों में बंट गए है जो मारवाड़ी समाज के लिए ठीक नही है। एकता में ही बल है। अत: हम जात पात में नहीं बंटकर एक मारवाड़ी के पहचान बनाए। उन्होंने मारवाड़ी समाज के सभी घटक समाजो के बोध विचार संबंधो का मान्यता देने पर भी बल दिया। उन्होंने प्री-वेडिंग, फोटो सूट एवं खुले आम मद्यपान जैसी कई सामाजिक कुरितियों का भी विरोध किया। इसके पश्चात धन्यवाद ज्ञापन और सामूहिक राष्ट्र गान हुआ। तत्पश्चात समारोह समाप्ति की घोषणा की गई।

वृक्षारोपण कार्यक्रम

मारवाड़ी सम्मेलन बंगाईगांव शाखा तथा मारवाड़ी सम्मेलन बंगाईगांव महिला शाखा द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत कुल ५१ पौधों का रोपण किया गया।

इस अवसर पर नेताजी विद्यापीठ स्कूल, न्यू बंगाईगांव, के शिक्षक एवं शिक्षिकाएँ, दोनों शाखाओं के सदस्यगण भारी संख्या में उपस्थित थे।

बंगाईगांव शाखा की ओर से निम्न पदाधिकारी उपस्थित रहे:

उपाध्यक्ष: श्री प्रकाश बैद, श्री राजेश अग्रवाल, श्री मनोज सरावगी, सचिव: श्री राजकुमार कोठारी, कोषाध्यक्ष: श्री रोहित जैन, सलाहकार: श्री अखयचंद बैद, सह सचिव: ब्रह्म शर्मा, गोपाल हरलालका, श्री महेश अग्रवाल, श्री सरजीत सिंह भारी, श्री रामअवतार पारीक, श्री पुखराज नाहटा, श्री प्रमोद हरलालका, श्री मनीष लखोटिया, श्री अशोक सुरेका, श्री बिनीत सुरेका।

प्रांतीय उपाध्यक्ष: श्री राजेन्द्र हरलालका

महिला शाखा की ओर से उपस्थित रहीं:

अध्यक्षा: श्रीमती मंजू जैन

सचिव: श्रीमती चंदा भंसाली

सदस्यगण: श्रीमती अर्चना सुरेका, श्रीमती कुसुम श्यामसुखा, श्रीमती सरोज अग्रवाल, श्रीमती सरोज सिंघी, श्रीमती कविता कोठारी, श्रीमती सुमन सैन, श्रीमती उर्मिला लुनिया, श्रीमती पिंकी चिरानिया।

विद्यालय की प्रधान शिक्षिका ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि समाज बंधुओं का विद्यालय में पधारना सौभाग्य की बात है। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण हेतु वृक्षारोपण को एक प्रशंसनीय पहल बताया। कार्यक्रम में शिक्षिकाओं को चुनड़ी एवं शिक्षकों को फुलाम गामोछा से सम्मानित किया गया।

रक्तदान शिविर

मारवाड़ी सम्मेलन गुवाहाटी शाखा द्वारा लेफ्टिनेंट नीता जी शर्मा की स्मृति में १५ जून को मेफेयर स्प्रिंग वैली रिसॉर्ट में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।

कोकराझाड़ शाखा का गठन एवं शपथग्रहण सम्पन्न

दिनांकः २१ जून २०२५ को पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के अंतर्गत कोकराझाड़ शाखा का गठन एवं शपथग्रहण समारोह अत्यंत गरिमामय वातावरण और आत्मीय आतिथ्य के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री सुनील आंचलिया को संस्थापक अध्यक्ष एवं श्री गौतम भूरा को संस्थापक सचिव घोषित किया गया।

दीप प्रज्वलन के पश्चात सभा की विधिवत शुरुआत हुई।

प्रांतीय अध्यक्ष श्री कैलाश काबरा द्वारा अध्यक्ष श्री सुनील आंचलिया को शपथ दिलाई गई। सचिव, उपाध्यक्ष, सह-मंत्री एवं कोषाध्यक्ष को प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्र हरलालका ने शपथ दिलाई। कार्यकारिणी सदस्यों को प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री विनोद लोहिया ने शपथ ग्रहण करवाई।

प्रांतीय अध्यक्ष श्री कैलाश काबरा ने नवनियुक्त कार्यकारिणी को बधाई देते हुए सम्मेलन की सामाजिक भूमिका पर प्रकाश डाला।

अध्यक्ष श्री सुनील आंचलिया ने उन्हें अध्यक्ष बनाने पर सभी का आभार प्रकट किया एवं कहा कि आप सभी के सहयोग से एवं सम्पूर्ण निष्ठा के साथ सम्मेलन के कार्यों को संपादित करने के प्रयास करूंगा।

इस अवसर पर बंगाईगांव, गोसाईगांव तथा बंगाईगांव महिला शाखा के पदाधिकारियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। कोकराझाड़ की विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में मातृशक्ति की सहभागिता ने आयोजन को विशेष बना दिया।

मंच संचालन श्री राहुल शर्मा ने कुशलता से किया एवं धन्यवाद ज्ञापन **श्री रविशंकर शर्मा** द्वारा प्रस्तुत किया गया।

रूपकोंवर ज्योति प्रसाद अग्रवाला की जयंती मनाई गई

१७ जून २०२५ मारवाड़ी सम्मेलन शिवसागर शाखा द्वारा रूपकोंवर ज्योति प्रसाद अग्रवाला के जन्मदिन पर शिवसागर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में समाज द्वारा स्थापित प्रतिमूर्ति पर धूप दीप द्वारा प्रज्वलित कर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए माल्यार्पण के साथ स्मरण किया गया। इस अवसर पर शाखा अध्यक्ष श्री प्रदीप कुमार खेमका, शाखा सचिव श्री आनंद प्रकाश केडिया, शाखा उपाध्यक्ष श्री रूपचंद करनानी तथा स्कूल की प्रधानाध्यापिका श्री मंजुलता चेतिया मौजूद थी।

प्रांतीय समाचार : पूर्वोत्तर

फकिराग्राम महिला शाखा का शपथ विधि सम्पन्न

दिनांक २४ मई २०२५ को फकिराग्राम महिला शाखा की शपथ विधि का एक अत्यंत सुंदर एवं गरिमामय कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह आयोजन राम मंदिर के सौम्य और मनोहारी प्रांगण में संपन्न हुआ, जिसमें लगभग २० महिला सदस्याएं उपस्थित थीं।

आसन ग्रहण के पश्चात प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्र हरलालका एवं निवर्तमान प्रांतीय उपाध्यक्ष (मंडल G) श्री सरजीत सिंह भारी को मंचासीन किया गया। इस अवसर पर श्रीमती सरिता शर्मा ने अपने कार्यकाल के अनुभव साझा करते हुए बताया।

प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्र हरलालका द्वारा श्रीमती अनिमा अग्रवाल को अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई गई। सचिव पद हेतु श्रीमती पिंकी अग्रवाल एवं अन्य कार्यकारिणी सदस्यों को श्री सरजीत सिंह भारी द्वारा शपथ ग्रहण करवाई गई।

श्री सरजीत सिंह भारी ने अपने संबोधन में कहा कि ग्रामीण परिवेश में कार्यरत फकिराग्राम महिला शाखा ने अत्यंत उत्कृष्ट कार्य किया है।

नवनिर्वाचित अध्यक्षा श्रीमती अनिमा अग्रवाल ने अपने विचार व्यक्त किए। श्रीमती पिंकी अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

नगांव शाखा का शपथ ग्रहण सम्पन्न

श्री हनुमान जन्मोत्सव समिति भवन में आयोजित मारवाड़ी सम्मेलन नगांव शाखा के नवीन सत्र २०२५-२७ के शपथ ग्रहण समारोह में श्री प्रदीप शोभासरिया, श्री प्रमोद कोठारी एवं उनकी टीम को सर्व समाज की साक्षी में कार्यभार हस्तांतरित किया।

इस समारोह में मुख्य अतिथि प्रांतीय उपाध्यक्ष (मुख्यालय) श्री विनोद कुमार लोहिया, मुख्य वक्ता प्रांतीय महामंत्री श्री रमेश कुमार चांडक, पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष श्री विजय मंगलुनिया, मंडल उपाध्यक्ष श्री संजय गाड़ोदिया, मंडल सहायक मंत्री एवं शाखा सचिव श्री अजय मित्तल, कोषाध्यक्ष श्री मालचंद अग्रवाल उपस्थित थे।

प्रांतीय समाचार : पूर्वोत्तर

शिवसागर शाखा द्वारा पितृ दिवस का पालन

पितृ दिवस के शुभ अवसर पर हमारे नगर के व्योवृद्ध ज्येष्ठ नागरिक, शिक्षाविद, खिलाड़ी श्री दयानंद जी भराली के ९० वें जन्मदिन पर उनके निवास पर जाकर असमिया संस्कृति प्रतीक फुलाम गमछा, दुशाला, एवं स्मृति चिन्ह के साथ सम्मान किया गया एवं आशीर्वाद ग्रहण किया।

श्री दयानंद जी भराली के पुत्र श्री अंकुर भराली तेजपुर जिला के जिला आयुक्त है और उनकी पुत्रवधू शिवसागर गर्ल्स कॉलेज की प्राध्यापिका के रूप में कार्यरत है।

इस मौके पर सम्मेलन के शिवसागर शाखा अध्यक्ष श्री प्रदीप कुमार खेमका, शाखा सचिव श्री आनंद प्रकाश केडिया, प्रांतीय कार्यकारिणी सदस्य श्री रूपचंद करनानी, उपसचिव श्री विजय कसेरा, कार्यकारिणी सदस्य श्री द्वारिका प्रसाद पारीक, श्री नंदकिशोर झवर तथा सदस्य श्री सुरेश बरेलिया मौजूद थे।

प्रांतीय समाचार : छत्तीसगढ़

सहयोग राशि प्रदान

असम सरकार के कैबिनेट मंत्री रूपेश ग्वाल जी से मारवाड़ी सम्मेलन छत्तीसगढ़ इकाई के प्रांत अध्यक्ष अमर बंसल निवर्तमान अध्यक्ष पुरुषोत्तम सिंघानिया प्रांत महामंत्री जी. जी. अग्रवाल, प्रांत कोषाध्यक्ष सुरेश चौधरी ने नया रायपुर सर्किट हाउस में सौजन्य मुलाकात की। पहलगाम आतंकी दुर्घटना में शहीद हुए दिनेश मीरानिया के घर सौजन्य मुलाकात के उपरांत असम सरकार द्वारा ५ लाख का सहयोग राशि प्रदान करने के साथ-साथ शोक पत्र प्रदान किया। इस हेतु अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने मारवाड़ी समाज की ओर से असम सरकार की भूरी-भूरी प्रशंसा किया।

प्रांतीय समाचार : झारखंड

सोनारी शाखा द्वारा शरबत वितरण

झारखंड प्रान्त के अंतर्गत मारवाड़ी सम्मेलन सोनारी शाखा की ओर से निर्जला एकादशी के पावन अवसर पर शीतल ग्लूकोस शरबत का वितरण एरोड्रम सब्जी बाजार के समीप किया गया।

उपरोक्त शिविर का उद्घाटन समाज के वरिष्ठ सदस्य श्री रतनलाल सेन एवं समाजसेवी श्रीमती मैना देवी धर्मपत्नी स्व. मुक्ता लाल अग्रवाल ने संयुक्त रूप से किया।

इस अवसर पर समाजसेवी श्रीमती मैना देवी ने कहा की मारवाड़ी सम्मेलन सोनारी शाखा हमेशा से सामाजिक सरोकारों से जुड़ी रही है। प्रत्येक सदस्य अपने निष्ठा और समर्पण के साथ काम कर रहे हैं। समाज के हर छोटे-बड़े कार्यो को बहुत ही सुंदर ढंग से संपन्न करते हैं मैं उन सभी को अपनी ओर से बहुत-बहुत बधाई देती हूँ।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री दीपक पारीक ने शाखा के सदस्यों को बधाई देते हुए कहा की कहा सोनारी शाखा निर्जला एकादशी के पावन अवसर पर शीतल ग्लूकोस शरबत का वितरण करना धार्मिक मान्यताओं के अनुसार बहुत ही पुण्य का कार्य है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता अध्यक्ष आनंद अग्रवाल के द्वारा की गई एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री नारायण अग्रवाल के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से शकुंतला शर्मा चंद शर्मा अंजू अग्रवाल राधा अग्रवाल, महावीर प्रसाद अग्रवाल (ताऊ) श्याम सुंदर अग्रवाल, बजरंग बाहेती, विष्णु शर्मा, महावीर अग्रवाल, दीपक अग्रवाल, अशोक जैन, कैलाश शर्मा, सहित अन्य सदस्य उपस्थित थे।

प्रांतीय समाचार : कर्नाटक

आश्रम के रहवासियों की सेवा

मारवाड़ी सम्मेलन महिला परिधि की अध्यक्ष माया अग्रवाल के नेतृत्व में अनाथ आश्रम के रहवासियों की सेवा का लाभ लिया गया। आश्रम को ४०० सौ फुटवियर दिए गए। सचिव शालिनी अग्रवाल, कार्यक्रम संयोजिका लता चौधरी, सविता गुप्ता, पारूल अग्रवाल, पूजा अग्रवाल मदन, सलाहकार मंजु अग्रवाल, कोषाध्यक्ष हेमलता सावरिया, उपाध्यक्ष निर्मल गोयल, अंजू अग्रवाल, पिंकी अग्रवाल आदि मौजूद थीं।

Best Wishes from :

OMAHA

OMAHA FINANCIAL SERVICES PVT. LTD.

One stop Solution for your

Investment and Insurance needs!

MUTUAL FUNDS | EQUITY | INSURANCE | PMS

Suryadeep Building
1/1E/6, Rani Harshamukhi Road
Kolkata-700 002

Mobile : 9830916100 | Email : info@omaha.org
Website : www.omaha.org

प्रतिभा का निस्वार संयुक्त रहने में

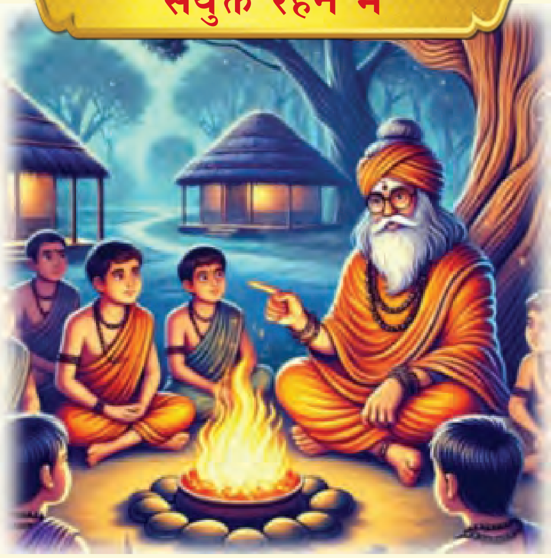

ऋषि अंगिरा के शिष्य उदयन बड़े प्रतिभाशाली थे, पर अपनी प्रतिभा के स्वतंत्र प्रदर्शन की उमंग उनमें रहती थी। साथी-सहयोगियों से अलग अपना प्रभाव दिखाने का प्रयास यदा-कदा किया करते थे। ऋषि ने सोचा यह वृत्ति इसे ले डूबेगी। समय रहते समझाना होगा। सर्दी का दिन था। बीच में रखी अंगीठी में कोयले दहक रहे थे। सत्संग चल रहा था। ऋषि बोले- "कैसी सुंदर अँगीठी दहक रही है। इसका श्रेय इसमें दहक रहे कोयलों को है न?" सभी ने स्वीकार किया। ऋषि पुनः बोले - "देखो, अमुक कोयला सबसे बड़ा, सबसे तेजस्वी है। इसे निकालकर मेरे पास रख दो। ऐसे तेजस्वी का लाभ अधिक निकट से लूँगा।"

चिमटे से पकड़कर वह बड़ा तेजस्वी अंगार ऋषि के समीप रख दिया। पर यह क्या अंगार मुरझा सा गया। उस पर राख की पर्त आ गई और वह तेजस्वी अंगार काला कोयला भर रह गया। ऋषि बोले- "बच्चो! देखो, तुम चाहे जितने तेजस्वी हो, पर इस कोयले जैसी भूल मत कर बैठना। अँगीठी में सबके साथ रहता तो अंत तक तेजस्वी रहता और सबके बाद तक गर्मी देता। पर अब न इसका श्रेय रहा और न इसकी प्रतिभा का लाभ हम उठा सके।"

शिष्यों को समझाया "परिवार और समाज वह अँगीठी है, जिसमें प्रतिभाएँ संयुक्त रूप से तपती हैं। व्यक्तिगत प्रतिभा का अहंकार न टिकता है, न फलित होता है। अकेले चलने का अहंकार प्रखर प्रतिभा को भी धूमिल बना देता है। साथ-साथ मिल-जुलकर काम करने से ही व्यक्ति और समाज का कल्याण होता है।"

"वृद्ध पिता को घर से मत निकालो"

एक बहुत सुंदर वधू ने पति को पूरी तरह वशवर्ती कर लिया। घर में बहुत बूढ़ा बाप था। खाँसता और असमर्थ होने के कारण तरह-तरह की माँगे करता। वधू ने पति से हठ किया कि या तो इस बूढ़े को हटाओ, नहीं तो मैं नैहर चली जाऊँगी और फिर कभी नहीं आऊँगी। पति को वधू के सामने झुकना पड़ा।

वह ऊँटों पर माल ढ़ोने का काम करता था। सो एक दिन पिता को नदी पर पर्व स्नान के लिए चलने को तैयार कर लिया। साथ ले गया और रास्ते में मार कर उसे झाड़ी के नीचे गाड़ दिया। दिन गुजरने लगे। पुत्र जन्मा, बड़ा हुआ। उसको भी सुंदर वधू आई। बाप बूढ़ा और अशक्त हुआ। घटनाक्रम पुराना ही दुहराया गया। बूढ़े को हटा देने का निराकरण भी उसी प्रकार हुआ। ऊँट पर बैठाकर पर्व स्नान के बहाने ले जाया गया और मार कर उसी झाड़ी में गाड़ दिया गया, जिसके नीचे अपने बाप को गाड़ा था। इस लड़के को भी लड़का हुआ। उसकी भी सुंदर वधु आई। बुढ़ापा, अशक्तता और खाँसी का दौर चला और नववधू द्वारा उसे भी हटा देने का पुराना प्रस्ताव सामने आया। लड़के ने बाप को ऊँट पर बैठा कर पर्व स्नान के लिए सहमत कर लिया।

संयोगवश उसे भी मारने और गाड़ने के लिए वहीं झाड़ी उपयुक्त पाई गई। बेटा छुरा निकालने ही वाला था कि बाप ने उसे रोका और कहा- "यहाँ दो गड्ढे खोद कर देखो।" दोनों में दो अस्थिपंजर पाए गए, जो बूढ़े बाप और बाबा के थे। उनका दुखद अंत भी वधुओं के आग्रह पर किया गया था। बुड्ढे ने कहा- "मुझे मारने पर तो इसी परंपरा के अनुसार तेरी भी दुर्गति होगी। इसलिए इस प्रचलन को तोड़ना ही उपयुक्त है। मैं स्वयं कहीं चला जाता हूँ। तू बिना मारे ही लौट जा। वधू से मार दिए जाने की बात कह देना।"

बेटे की आंख खुल गई और वह पिता को वापस घर ले आया। उनकी सेवा करने लगा। वधू को कह दिया कि उसे जो भी करना हो, करे। वह पिता को नहीं छोड़ेगा, उनकी सेवा करेगा। उफान शांत हो गया। पत्नी भी न गई। बूढ़ा भी बच गया और परंपरा भी टूटी। जो चलती रहती तो अनेक पीढ़ियों तक इसी प्रकार बूढ़े बापों का वध होता रहता। आज अनेक परिवार ऐसी ही दुर्गति की स्थिति में हैं। दो पीढ़ीयों में पारस्परिक टकराव होता देखा जाता है। समझ-बूझ कर काम लिया जाय, तो आश्रय व्यवस्था के माध्यम से विग्रह टाले जा सकते हैं।

पाखंड

टीवी पर जगत गुरु शंकराचार्य कांची कामकोटि जी से प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम चल रहा था।

एक व्यक्ति ने प्रश्न किया कि हम भगवान को भोग क्यों लगाते हैं? हम जो कुछ भी भगवान को चढ़ाते हैं 'उसमें से भगवान क्या खाते हैं?' क्या पीते हैं?

क्या हमारे चढ़ाए हुए पदार्थ के रूप रंग स्वाद या मात्रा में कोई परिवर्तन होता हैं? यदि नहीं तो हम यह कर्म क्यों करते हैं। क्या यह पाखंड नहीं हैं? यदि यह पाखंड है तो हम भोग लगाने का पाखंड क्यों करें?

मेरी भी जिज्ञासा बढ़ गई थी कि शायद प्रश्नकर्ता ने आज जगद्गुरु शंकराचार्य जी को बुरी तरह घेर लिया है देखूं क्या उत्तर देते हैं।

किंतु जगद्गुरु शंकराचार्य जी तनिक भी विचलित नहीं हुए। बड़े ही शांत चित्त से उन्होंने उत्तर देना शुरु किया।

उन्होंने कहा यह समझने की बात है कि जब हम प्रभु को भोग लगाते हैं तो वह उसमें से क्या ग्रहण करते हैं।

मान लीजिए कि आप लड्डू लेकर भगवान को भोग चढ़ाने मंदिर जा रहे हैं और रास्ते में आपका जानने वाला कोई मिलता है और पूछता है यह क्या है तब आप उसे बताते हैं कि यह लड्डू है। फिर वह पूछता है कि किसका है?

तब आप कहते हैं कि 'यह मेरा है।'

फिर अब आप वही मिष्ठान्न प्रभु के श्री चरणों में रख कर उन्हें समर्पित कर देते हैं और उसे लेकर घर को चलते हैं तब फिर आपको जानने वाला कोई दूसरा मिलता है और वह पूछता है कि यह क्या है?

तब आप कहते हैं कि 'यह प्रसाद है' फिर वह पूछता है कि किसका हैं? तब आप कहते है कि यह 'हनुमान जी का है।'

अब समझने वाली बात यह है कि लड्डू वही हैं।

उसके रंग रूप स्वाद परिमाण में कोई अंतर नहीं पड़ता है तो प्रभु ने उसमें से क्या ग्रहण किया कि उसका नाम बदल गया। वास्तव में 'प्रभु ने मनुष्य के ममकार को हर लिया'।

यह मेरा है का जो भाव था, अहंकार था प्रभु के चरणों में समर्पित करते ही उसका हरण हो गया।

'प्रभु को भोग लगाने से मनुष्य विनीत स्वभाव का बनता है शीलवान होता है। अहंकार रहित स्वच्छ और निर्मल चित्त मन का बनता हैं।'

इसलिए इसे पाखंड नहीं कहा जा सकता हैं। यह मनो विज्ञान है।

इतना सुन्दर उत्तर सुन कर मैं भाव विह्वल हो गया।

कोटि-कोटि नमन है देश के संतों को जो हमें अज्ञानता से दूर ले जाते हैं और हमें ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित करते हैं।

यज्ञ का प्रसाद

गुरुनानक जी ने संत कबीर के संतत्व की परीक्षा लेने हेतु एक चवन्नी उनके पास भेजी और साथ ही कहलवाया कि इस चवन्नी की कोई ऐसी वस्तु खरीदें, जिसे खाकर सौ व्यक्ति तृप्त हो जाएँ। कबीर ने चवन्नी ले ली, बाजार गए और चवन्नी की हींग खरीद लाए। उस दिन नगर के एक सेठ भोज कर रहे थे। कबीर हींग लेकर उनके पास पहुँचे और उसकी छौंक लगवा दी। वह दाल जिसने खाई, उसने हींग के बघार की भरपूर प्रशंसा की।

अब कबीर ने एक रुपया नानक के पास भेजा और कहलवाया कि इस एक रुपये से ऐसी दवा खरीदें, जिससे अनेक रोगी ठीक हो सकें। नानक ने गंभीरतापूर्वक विचार किया, फिर उन्होंने एक रुपये की गुग्गुल, तालपत्र, कपूरकचरी, पृष्ठपर्णी, अगर-तगर, तेजपत्र जैसी जड़ी-बूटियाँ मँगवाई और उनका मिश्रण बनाकर हवन करने लगे। हवन का धुआँ फैला तो अनेकों ने उसे ग्रहण किया। औषधि सबके शरीर में पहुँची और सबके शरीर के कीटाणु नष्ट हो गए, सब स्वस्थ हो गए।

कबीर ने नानक की भूरी-भूरी प्रशंसा की तो नानक ने कहा – "संत कबीर! इसका श्रेय तो उन ऋषियों को जाता हैं, जिन्होंने संसार के स्वास्थ्य के लिए यज्ञ जैसे महान विज्ञान की खोज की थी।

manipalhospitals
LIFE'S ON

From Complex Procedures to Diagnosis,

Our Team Has All the Answers.

Avail Advanced Care at Our Department of Cardiology.

Be it complex angioplasties or advanced procedures like MICRA and LVADs — we bring world-class cardiac care to the heart of Kolkata.

Procedures:

- Interventional Procedures (TAVR, CSP, ICD)
- Latest Devices (MICRA, ICD, LVAD)
- Minimally-Invasive Cardiac Surgery
- Heart Transplant

Our Specialities:

55+ Beds | 7+ Cath labs | 75+ Cardiologists

State-of-the-Art CTVS With ECMO | 15+ Cardiothoracic Surgeons

Visit Manipal Hospitals

Broadway | Saltlake | Mukundapur | Dhakuria | EM Bypass

To Book an Appointment 033 6680 0000

Scan to access special privileges

आयुर्वेदिक स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन

आताबिरा में जापानी तकनीक से हुई निःशुल्क जांच शिविर के पहले दिन ८० से अधिक रोगियों का जांच किया गया। आताबिरा मारवाड़ी सम्मेलन एवं मारवाड़ी युवामंच के संयुक्त तत्वावधान में रेट्रो ह्यूमन केयर फाउंडेशन के सहयोग से आताबिरा अग्रसेन भवन में तीन दिवसीय आयुर्वेदिक स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस विशेष शिविर में मधुमेह, रक्तचाप, हृदय रोग, जोड़ों का दर्द, पाचन तंत्र की समस्या, महिलाओं की मासिक धर्म से जुड़ी समस्याएं, एलर्जी, चमर्रोग, फैटी लीवर, माइग्रेन, थायरॉइड आदि की जापानी तकनीक से उन्नत स्तर पर जांच की जा रही है तथा रोगियों को निःशुल्क आयुर्वेदिक औषधियां भी प्रदान की जा रही हैं। इस शिविर का उद्घाटन मोमीना खातून के संयोजन में सम्मेलन के संस्थापक अध्यक्ष विजय मित्तल, अध्यक्ष सत्यनारायण अग्रवाल, युवामंच अध्यक्ष पुलकित अग्रवाल एवं जागृति शाखा की अध्यक्ष रेखा अग्रवाल द्वारा किया गया। ह्यूमन केयर फाउंडेशन के निदेशक डॉ. के. रत्नम के नेतृत्व में डॉ. पी.सी. दलाई, डॉ. शीतल नंद, टी. वेकटराव एवं सुनील जी ने शिविर में जापानी टेक्नोलॉजी द्वारा मरीजों की शारीरिक जांच कर रहे हैं। शिविर के आयोजन एवं संचालन में उमेश अग्रवाल, राकेश अग्रवाल, अर्पित बांका, शिवम, पियूष, अनुप एवं संदीप प्रमुख रूप से सहयोग कर रहे हैं। यह शिविर स्थानीय नागरिकों कदो आयुर्वेदिक पद्धति से स्वास्थ्य लाभ प्रदान करने की एक सराहनीय पहल है।

सेवा दान

अंगुल शाखा द्वारा जगन्नाथ मंदिर में देवस्नान पूर्णिमा में सेवा प्रदान, प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम अग्रवाल, जोनल सचिव रोहित लिहाला, शाखाध्यक्ष श्री रमेश शाहा तथा अन्य पदाधिकारिगण।

स्वास्थ्य सेवा

अंगुल शाखा द्वारा प्रदत्त तथा संबलपुर शाखा तथा बराईपाली पुलिस स्टेशन द्वारा मिलीत रूप से परिचालित होने वाले एम्बुलेंस का लोकार्पण संबलपुर ASP, SDOP, हीराकुद, धनुपाली, सदर, बरेईमाली, तथा अनेक पुलिस अधिकारी, सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष दिनेश अग्रवाल, उपाध्यक्ष श्री मंगतूराम अग्रवाल, शाखा अध्यक्ष श्री शीशराम अग्रवाल, प्रांतीय कार्यकारिणी के श्री चंद्र कुमार सराफ, श्री श्याम सुंदर अग्रवाल तथा अन्यान्य बहुत से सदस्य, पदाधिकारी तथा बड़ी संख्या में स्थानीय लोग उपस्थित थे। श्री अरुण केजरीवाल ने निःशुल्क ऑक्सीजन प्रदान करने पर सहमति दी।

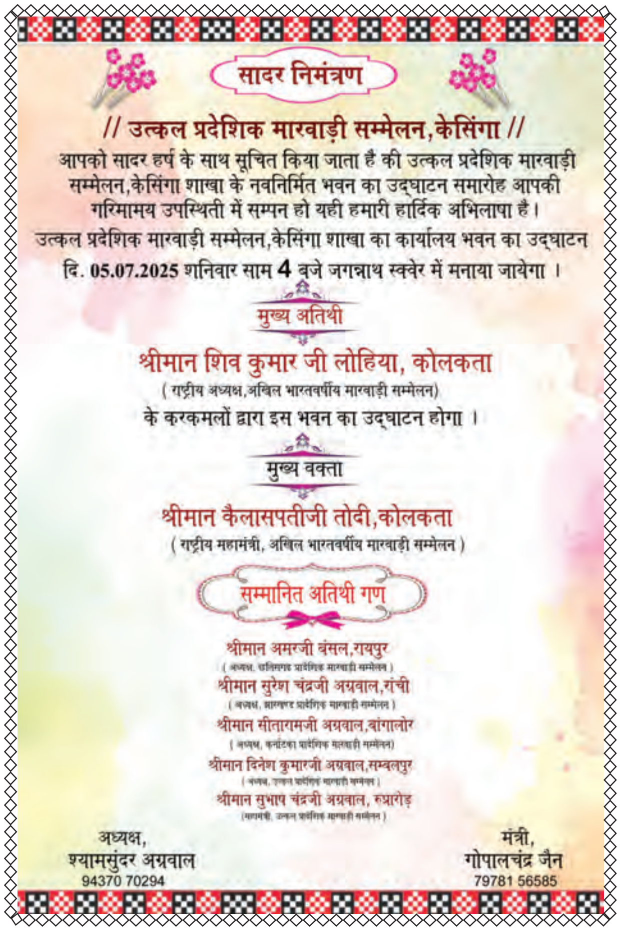

सादर निमंत्रण

// उत्कल प्रदेशिक मारवाड़ी सम्मेलन,केसिंगा //

आपको सादर हर्ष के साथ सूचित किया जाता है की उत्कल प्रदेशिक मारवाड़ी सम्मेलन,केसिंगा शाखा के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन समारोह आपकी गरिमामय उपस्थिती में सम्पन हो यही हमारी हार्दिक अभिलाषा है।

उत्कल प्रदेशिक मारवाड़ी सम्मेलन,केसिंगा शाखा का कार्यालय भवन का उद्घाटन दि. 05.07.2025 शनिवार साम 4 बजे जगन्नाथ स्क्वेर में मनाया जायेगा।

मुख्य अतिथी

श्रीमान शिव कुमार जी लोहिया, कोलकता

(राष्ट्रीय अध्यक्ष,अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन)

के करकमलों द्वारा इस भवन का उद्घाटन होगा।

मुख्य वक्ता

श्रीमान कैलासपतीजी तोदी,कोलकता

(राष्ट्रीय महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन)

सम्मानित अतिथी गण

श्रीमान अमरजी बंसल,रायपुर

श्रीमान सुरेश चंद्रजी अग्रवाल,रांची

श्रीमान सीतारामजी अग्रवाल,बांगालोर

श्रीमान दिनेश कुमारजी अग्रवाल,सम्बलपुर

श्रीमान सुभाष चंद्रजी अग्रवाल, रुपागेड़

अध्यक्ष,
श्यामसुंदर अग्रवाल
94370 70294

मंत्री,
गोपालचंद्र जैन
79781 56585

प्रांतीय समाचार : उत्तराखंड

श्री रंजीत टिबड़ेवाल प्रांतीय अध्यक्ष निर्वाचित

दिनांकः ३० मई २०२५ को उत्तराखंड प्रदेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की बैठक श्री रंजीत टिबड़ेवाल के कार्यालय में हुई। बैठक में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं उत्तराखंड प्रभारी श्री रंजीत जालान भी उपस्थित थे। बैठक में उत्तराखंड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष हेतु निर्विरोध श्री रंजीत टिबड़ेवाल को प्रांतीय अध्यक्ष के रूप में चुना गया एवं उन्हें प्रांतीय अध्यक्ष का पदभार सौंपा गया।

प्रांतीय अध्यक्ष श्री रंजीत टिबड़ेवाल ने सभी सदस्यों को धन्यवाद दिया। अपनी नई कार्यकारिणी का भी गठन किया। श्री आशीष वेदप्रकाश गुप्ता को प्रांतीय महामंत्री बनाया। उसके बाद निवर्तमान प्रांतीय कोषाध्यक्ष श्री रामजी केजरीवाल ने नये प्रांतीय कोषाध्यक्ष श्री अजय शर्मा को संबंधित सारे दस्तावेज सुपुर्द किया।

बैठक में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, प्रभारी श्री रंजीत जालान निवर्तमान प्रांतीय अध्यक्ष श्री संतोष खेतान, निवर्तमान प्रांतीय महामंत्री श्री संजय जाजोदिया, निवर्तमान प्रांतीय कोषाध्यक्ष श्री रामजी केजरीवाल, प्रांतीय कोषाध्यक्ष श्री अजय शर्मा उपस्थित थे।

संक्षिप्त परिचय - श्री रंजीत टिबड़ेवाल

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की प्रांतीय ईकाई उत्तराखंड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री रंजीत टिबड़ेवाल का जन्म २ जुलाई १९७७ में हुआ। आप मूल रूप से बखरी बाजार जिला बेगूसराय बिहार के निवासी हैं। आपका पैतृक राजस्थान के झुनझुनू है। आपके पिता का नाम स्व. श्री राजेन्द्र टिबड़ेवाल एवं माता का नाम स्व. श्रीमती शिरोमनी देवी हैं। आपने २००४ में दिल्ली से सीए की पढ़ाई की। २००६ में हरिद्वार आना हुआ यही आपका ब्याह २००८ में हुआ। उत्तराखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के स्थापना के समय में महामंत्री के पद पर कार्यरत रहें। आप मारवाड़ी सम्मेलन के साथ-साथ हरिद्वार की अन्य सामाजिक संस्थाओं एवं व्यवसायिक संगठनों शिव शक्ति समिति, सेवा भारती एवं सामु मैनुफैक्चरिंग एसोसिएशन से जुड़े हुए हैं। सम्मेलन परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

प्रांतीय समाचार : मध्यप्रदेश

माँ अहिल्या का ३०१वाँ जन्मदिवस समारोह

मालवा की महारानी अहिल्याबाई के ३०१ वे जन्मदिवस पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की इंदौर इकाई, इंदौर मारवाड़ी सम्मेलन ने माता अहिल्या के हृदय स्थान राजवाड़ा पर स्थित उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर माता को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किया। मां अहिल्या अपनी भक्ति और निष्ठा के लिए हमेशा पूजनीय है। उनके जीवन का एकमात्र ध्येय अपनी प्रजा के लिए समर्पित रहकर अपने आराध्य भगवान शिवजी को स्मरण करना था। उनके जीवन में कर्म एवं निष्ठा का अद्भुत संतुलन था। उनकी भक्ति के कारण ही हमारा यह मालवा क्षेत्र सदैव प्राकृतिक एवं राजनीतिक आपदाओं से सदा सुरक्षित रहा है।

जिस तरह माता अहिल्या ने इंदौर को एक खूबसूरत नगरी बनाया उसी तरह इंदौर इकाई भी यही कोशिश करेगा कि अपने कर्म एवं निष्ठा तथा सामाजिक दायित्व को संतुलित रखते हुए मारवाड़ी समाज के संस्कार, संस्कृति और मानवीय मूल्यों को ध्यान में रखते हुए और वर्तमान समय को समझते हुए कार्य करें।

कार्यक्रम में अध्यक्ष राजेश थरड़, सचिव रंजन अग्रवाल, कोषाध्यक्ष अतिन अग्रवाल, उमेश जी सिंघानिया, सुधीर जी बंका, रुचिर बिंदल, योगेश गोयल, आशुतोष गर्ग, भावेश अग्रवाल एवं श्रीमती राजेश्वरी थरड़ उपस्थित थे। कार्यक्रम पश्चात सभी सदस्यों ने मां लक्ष्मी, श्री राधा कृष्ण, बाँके बिहारी एवं श्री बाल हनुमान जी के मंदिरों के दर्शन किए, उसके पश्चात सभी सदस्यों ने इंदौरी नाश्ता पोहा, जलेबी एवं चाय का आनंद लिया।

शोक संदेश

श्रद्धांजली

स्व. हरी प्रसाद सराफ जी एवं
स्व. पार्वती देवी सराफ जी
के सुपुत्र
स्व. श्री मधु कुमार सराफ जी
का निधन दि. ०६.०६.२०२५
शुक्रवार को हो गया हैं।

हमारी विरासत

चांदनी चौक में गुरुद्वारा शीशगंज साहिब के पास में **'मारवाड़ी सार्वजनिक पुस्तकालय'** आज भी किताबों के शौकीन लोगों की पसंदीदा जगह है। १९१६ में महात्मा गांधी खुद इस लाइब्रेरी में पधारे थे, ये दिल्ली के मारवाड़ी समाज का अहम केंद्र माना जाता है, इसके अलावा आजादी की लड़ाई से जुड़ी कई गुप्त सभाएं भी इस पुस्तकालय में हुई थीं। पुस्तकालय के भवन को दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) ने १९९४ में हैरिटेज भी घोषित किया था।

महात्मा गांधी और तिलक यहां पहुंचे थे: यहां की कई रोचक जानकारियों को जानने के लिए 'ETV भारत' ने पुस्तकालय के महामंत्री राज कुमार तुलस्यान से बातचीत की, उन्होंने बताया कि इस पुस्तकालय की स्थापना मारवाड़ी समाज के वरिष्ठ सदस्य राज नारायण सर्राफ ने सन १९१५ में की थी, उस समय देश अंग्रेजों से आजादी की लड़ाई की तैयारियों में था, लोगों का झुंड में खड़ा होना भी मना था। इस दौर में मारवाड़ी पुस्तकालय में कई बड़े स्वतंत्रता सेनानी आम सभाएं किया करते थे। २७ नवंबर १९१६ को पुस्तकालय में महात्मा गांधी और बाल गंगाधर तिलक आए थे, जिन्होंने पुस्तकालय और इसमें मौजूद पुस्तकों की काफी सराहना की थी। इसके अलावा फिल्मी जगत में सदी के महानायक अमिताभ बच्चन के पिता कवि हरिवंश राय बच्चन भी पुस्तकालय में आ चुके है, १०८ साल पुराने इस पुस्तकालय में गरीब और आर्थिक रूप से कमजोर छात्र विभिन्न प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करते हैं, ऐसे छात्रों के लिए यहां पर विशेष व्यवस्था की गई है, राजकुमार ने बताया कि वे मामूली शुल्क देकर यहां आकर परीक्षाओं की तैयारी कर सकते हैं। इस पुस्तकालय को मारवाड़ी चैरिटेबल ट्रस्ट चलाता है, इसके अलावा इस पुस्तकालय में रोजाना ८ अखबार आते हैं, अखबार पढ़ने के लिए कोई शुल्क नहीं लिया जाता है, कोई भी, कभी भी यहां आकर अखबार पढ़ सकता है। लाइब्रेरी सोमवार को बंद रहती है।

अभी इस पुस्तकालय में ३०,००० से ज्यादा किताबें हैं, यहां कई पुस्तके अनोखी हैं, जो अन्य पुस्तकालयों में मिलना मुश्किल है, यहां नई और पुरानी दो हजार पत्र-पत्रिकाएं उपलब्ध हैं, पुस्तकालय में ७०० संदर्भ ग्रंथ का बहुमूल्य संग्रह और २१ दुर्लभ पांडुलिपियां मौजूद है।

भारत छोड़ो आंदोलन से जुड़ा पुस्तकालय:

१९९४ में दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) ने पुस्तकालय के भवन को हैरिटेज घोषित किया था, यहां सुबह-शाम पढ़ने वालों की भीड़ लगी रहती हैं। यहां आकर यकीन हो जाता है कि छपे हुए शब्दों की सुगंध पुस्तक प्रेमियों को अपनी तरफ खींच ही लेती है, **बता दें कि गांधीजी के आह्वान पर १९४२ में शुरू किए गए 'भारत छोड़ो आंदोलन' की दिल्ली में शुरुआत चांदनी चौक में महिलाओं के जुलूस के साथ हुई जो इसी मारवाड़ी पुस्तकालय से आरंभ हुई, जिसका नेतृत्व स्वतंत्रता सेनानी पार्वती देवी डीडवानिया ने किया था**। वो मारवाड़ी महिला थीं, मारवाड़ी समाज यहां पर कटरा और नई सड़क में दो स्कूल भी चला रहा है। इन्हें चालू हुए लगभग ९० वर्ष हो चुके हैं।

परंपरा या प्रदर्शन? समाज किस दिशा में जा रहा है? - एक चिंतनशील दृष्टिकोण

हमारा समाज सदियों से संस्कारों, परंपराओं और सामाजिक मूल्यों की नींव पर खड़ा है। विवाह जैसे संस्कार को हमारे शास्त्रों में **'सम्पूर्ण जीवन का सबसे पवित्र बंधन'** कहा गया है। यह एक **संस्कार** है - केवल एक आयोजन नहीं। परंतु वर्तमान समय में विवाह समारोहों में जिस प्रकार के तथाकथित 'नवाचार' सामने आ रहे हैं, वे केवल **चिंताजनक** ही नहीं, बल्कि अत्यंत **पीड़ादायक** भी हैं।

हाल ही में सोशल मीडिया पर हल्दी की रस्म से जुड़ा एक **शर्मनाक वीडियो** सामने आया। वह रस्म, जो सौभाग्य और मंगल का प्रतीक मानी जाती है, उसे जिस रूप में प्रस्तुत किया गया, वह न केवल **अशोभनीय** था, बल्कि समाज की **गरिमा** को भी ठेस पहुँचाने वाला था। और अब तो बारात में शराब के ठेके जैसे दृश्य सामने आ रहे हैं, जहां विवाह समारोह एक **संस्कार** नहीं, केवल **नशे और दिखावे का मेला** बन गया है।

समाज के जागरूक चिंतकों ने इस विषय पर गहरा **आक्रोश** और **विषाद** व्यक्त किया है।

अब सवाल यह है कि समाज में **नवाचार** के नाम पर इस तरह की अपसंस्कृति को जन्म देने वाले लोग आखिर हैं कौन? ये कोई बाहरी नहीं हैं, **हमारे ही बीच के लोग हैं**। वे लोग, जो आधुनिकता की आड़ में परंपराओं का मखौल उड़ाते हैं। जो रस्मों को श्रद्धा से निभाने के बजाय उन्हें **अभिनय और प्रदर्शन** बना देते हैं। जिन्हें न तो **पूर्वजों के मान-सम्मान** की चिंता है, न **संस्कृति की गरिमा** की। ये लोग परंपराओं की **चिता जलाकर**, उस पर **'वायरल' होने का उत्सव** मनाते हैं।

ऐसे कृत्य केवल किसी एक व्यक्ति या परिवार का अपमान नहीं होते, वे पूरे समाज की छवि को **धूमिल** करते हैं। दूसरे समाज की नजरों में हम **उपहास का पात्र** बनते हैं। हमारी धार्मिक, **सांस्कृतिक और सामाजिक अस्मिता** को ठेस पहुँचती है।

विवाह एक अनुष्ठान है, अभिनय नहीं। यहाँ रस्में श्रद्धा से निभाई जाती हैं, उनका उपहास नहीं उड़ाया जाता। आधुनिकता आवश्यक है, लेकिन **मर्यादा** के भीतर।

परंपराओं को सहेजकर चलने वाला समाज ही आगे बढ़ता है। **जो अपनी जड़ों को खो देता है**, उसकी शाखाएं चाहे जितनी ऊँची हों, **टिक नहीं पातीं**।

अब समय है **आत्मचिंतन** का। समाज के हर सजग सदस्य को यह तय करना होगा कि हम **परंपरा को जीना चाहते हैं या उसका मजाक बनाकर अपमानित करना**?

हमें चाहिए कि हम अपने **आत्मसम्मान**, **परंपराओं** और मूल्यों की रक्षा करते हुए, दिखावटी आधुनिकता से बचें। समय और काल के अनुसार **विवेकपूर्ण बदलाव** करें, लेकिन **आडंबरों की होड़** में अपने **संस्कारों को न गँवाएं। यही समाज के दीर्घ कालीन हितों के लिए आवश्यक है**।

– राज कुमार सराफ, उत्तर लखीमपुर

आपणी बात - स्तबक

'समाज विकास' पत्रिका के अंको से उद्धृत

मेरे लिए यह व्यक्तिगत रूप से प्रसन्नता की बात है की मेरे पहल पर सन २०१५ में **'संस्कार-संस्कृति-चेतना'** पर सम्मेलन ने कार्यक्रम प्रारंभ किया था और सफल भी हुआ था। बाद के वर्षों में कुछ शिथिलता आ गई। इस कार्यक्रम की सभी प्रांतो में प्रभावी करना है।

मई २०२३

हमेशा से कहा गया है कि सम्मेलन प्रांतों में बसता है। उसी प्रकार यह भी सठिक मान्यता है अगर हम यह कहे की प्रांत की उर्जा एवं उनकी सफलता शाखाओं की मजबूती में है। अतएव शाखाओं के साथ सूचनाओं का द्रुत आदान-प्रदान, उनके समुचित मार्गदर्शन, उनके कार्यों का अपेक्षित प्रोत्साहन देना प्रांतो एवं राष्ट्रीय कार्यालय का अभीष्ट होना चाहिए।

जून २०२३

शाखाओं के लिए निम्नलिखित घोषणा सम्मेलन के वर्त्तमान एवं भविष्य के लिए महत्वपूर्ण है :

१. शाखा स्तर पर निम्नलिखित पुरस्कार की घोषणा
२. २० शाखाओं को उनके प्रोजेक्ट के लिए आर्थिक अनुदान
३. सभी शाखाओं से सीधे संपर्क
४. नवनिर्वाचित शाखाध्यक्षों का समाज विकास में चित्र सहित संक्षिप्त परिचय का प्रकाशन
५. शाखाओं की गतिविधियों को फेसबुक, इंस्टाग्राम एवं समाज विकास द्वारा प्रचार।

सम्मेलन में योगदान देना यज्ञ में आहुति देने के समान है। सभी की आहुति से ही यह यज्ञ सफल होगा। इस यज्ञ का प्रतिफल होगा समाज एवं राष्ट्र का उत्थान। जब व्यक्तियों का समूह एक ही लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए लगन एवं निष्ठा से कर्मरत हो जाता है तो चमत्कार घटने लगता है। आईए, सब मिलकर इस चमत्कार के होने में अपना योगदान दें एवं इस चमत्कार के प्रत्यक्षदर्शी बनें।

जुलाई २०२३

हमारा पुनीत कर्तव्य है कि समाज को हम अपना सर्वश्रेष्ठ दें। कहा गया है – **धर्मो रक्षति रक्षितः**। आप धर्म की रक्षा करे, धर्म आपकी रक्षा करेगा। सम्मेलन को अपना सर्वश्रेष्ठ दें, सम्मेलन समाज को सशक्त करने के माध्यम से आपको सर्वश्रेष्ठ देगा।

सम्मेलन समाज और राष्ट्र के सामने नई-नई चुनौतियाँ है। पर हमें यह भी समझना है की कोई भी समस्या बिना समाधान के पैदा नहीं होती। इन चुनौतियों का हमें धैर्य, साहस एवं निष्ठा के साथ सामना करना है। समस्याएँ हमारे सुप्त शक्तियों को जागृत करती हैं, जो की नव-निर्माण में सहायक होती हैं। आप उस आदमी को हटा नहीं सकते जो प्रयास करना नहीं छोड़ता। इस सत्र के लक्ष्य को हमे संकल्पित होकर हांसिल करना हैं। उससे समाज में एक उदाहरण प्रस्तुत करेंगे एवं हमारी साख बढ़ेगी।

अगस्त २०२३

मेरी जानकारी में शायद सम्मेलन में काफी अरसे के बाद मेरे अनुरोध पर कार्यकारिणी समिति की बैठक के बाद बिहार प्रांत के प्रमंडल एवं शाखा अधिकारीयों के साथ एक बैठक आयोजित की गई। बैठक में उपस्थित सभी समाज बंधुओं का योगदान सम्मेलन एवं समाज के प्रति उनके प्रतिबद्धता का परिचायक है। जमीनी स्तर पर वस्तु स्थिति जाननें का मौका मिला। उनकी बातों में सकारात्मकता उर्जा का प्रवाह स्पष्ट महसूस किया जा सकता था। विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई। पटना की दोनों बैठकें संतोषजनक रही।

सितम्बर २०२३

हमारा सौभाग्य है कि हमारे पास सम्मेलन जैसा मंच है, जहाँ सदेव ही समाज को संगठित, परिमार्जित करने की दिशा में निरंतर प्रयास होता आया है। आज निराश होने की बजाय अपने संकल्पों को हमें मजबूती प्रदान करने का अवसर हैं। हम अगर अपनी भाषा, संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन, आचार-व्यवहार से कट जायेंगे तो हमारी पहचान ही नष्ट हो जाएगी। अतएव, इस दिशा में प्रयास करने के सिवाय कोई विकल्प ही नहीं है हमारे पास। हमारी नई पीढ़ी, नए पौध को हमारी संस्कृति के विषय में अवगत करवाना चाहिए। उन्हें यह बताने की जरुरत है कि परिवर्तन एक निरंतर प्रक्रिया है। पर हमें परिवर्तन के रथ पर सवार होकर लगाम अपनें हांथों में रखना है।

हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि हम घर में परिवार के सदस्यों से मायड़ भाषा में ही बात करेंगे। खासकर नए पीढ़ी से इस विषय में सजगता के साथ प्रयोग में लाएँगे। उसके लिए आने वाले त्योहार के सभी समारोहों में हम यह सन्देश दें।

अक्तूबर २०२३

सम्मेलन का असली स्वरूप सरसरी तौर से एक नजर में समझना कठिन है। सम्मेलन एक हिमशैल की तरह है। यह जितना ऊपर से दिखता है उससे दस गुना अधिक पानी के अंदर अदृश्य रहता है। सम्मेलन की असली शक्ति शाखाओं, प्रमंडलों एवं प्रांतो में है। जगह-जगह में सम्मेलन से जुड़े समाज-बंधुओं का उत्साह, लगन, निष्ठा एवं शक्ति का आभास होने पर सम्मेलन की शक्ति का अंदाजा लगाया जा सकता। पूरब से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण देश में अलग-अलग क्षेत्रों में बसे हुए समाज-बंधुओं को एक सूत्र में पिरोकर सम्मेलन समाज की अद्वितीय सेवा कर रहा है।

मैं आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगा वह है समाज में विभिन्न घटकों को एक सूत्र में जोड़ना। प्रारंभ से ही हमारे पूर्वजों का यही ध्येय एवं प्रयास रहा है। कुछ हद तक सफलता मिली है, पर अभी बहुत कुछ बाकी है। इस आवश्यकता के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए ही इस सत्र का नारा **'आपणो समाज – एक समाज – श्रेष्ठ समाज'** रखा गया है। इस संदर्भ में यह वास्तविकता ध्यान देने योग्य है कि समाज के बाहर सभी हमारे विभिन्न घटकों को मारवाड़ी के रूप में जानते हैं। जो भी भेद है

यह हमारा अंदरूनी हैं। उसका जितनी जल्दी समाप्त कर दिया जाय श्रेयस्कर होगा।

स्थापना दिवस विशेषांक दिसम्बर २०२३

सम्मेलन समाज के प्रहरी के रूप में, पूरे समाज का इन विषयों पर ध्यान आकृष्ट करने का निरंतर प्रयास कर रहा है। तथाकथित आधुनिकता के भूलभाषा आदि को तजते जा रहे है। वेशभूषा, खान-पान, भूलैया में हम अपनी संस्कृति-संपन्नता के साथ स्वच्छंदता का रहना हानिकारक होता है।

जनवरी २०२४

मानव जाति के पास क्षमता है कि हम हमारे अगली पीढ़ी को हमसे एक कदम आगे बढ़ते हुए जब देखते हैं तो हम प्रसन्न होते हैं। यह हमारे लिए अत्यंत अहम है कि अगली पीढ़ी थोड़ी अधिक खुशी से, कम उलझन, पक्षपात कम, कम डर, कम नफरत, कम कष्ट के साथ जीवन जी सके। दुसरे शब्दों में वह हमसे अधिक सुमति एवं कम कुमति के साथ जीवन जी सके। इसके लिए हमें आने वाली पीढ़ी का मार्ग प्रशस्त करना होगा। इस लक्ष्य को फलीभूत करने के लिए हमें स्वयं को अनुशासित करना होगा।

आज समाज में असंतोष एवं अन्य नकारात्मक उर्जा का सृजन हो रहा है। उसकी सकारात्मक उर्जा में परिवर्तन करने का एकमात्र उपाय है संस्कार-संस्कृति का पालन। कहा भी जाता है कि अगर बरसात की कमी होती है तो फसले खराब होती हैं और अगर संस्कार-संस्कृति का अभाव होता है तो नसलें खराब होती हैं। हमारे संस्कार ही अपराध एवं बुराईयों पर लगाम लगा सकते हैं, कानून के द्वारा यह संभव नहीं। सबसे बड़ी बात है कि बच्चों को संस्कार दिए बिना सुविधाएँ देना पतन का कारण है।

फरवरी २०२४

हमारी आवाज कमजोर इसलिए है, क्योंकि अंदर से हम बिखरे हुए हैं। बिखराव का निदान करने के लिए ही सम्मेलन के वर्तमान सत्र का नारा **'आपणो समाज – एक समाज – श्रेष्ठ समाज'** का प्रवर्तन किया गया है। अन्य समाज हमें सिर्फ मारवाड़ी समझता है, पर हम विभिन्न घटकों के रूप में स्वयं को देखते हैं। इसके लिए हमें सम्मिलित प्रयास की आवश्यकता है। राष्ट्रीय कार्यालय से भेजे गए पत्रों में दी गई जानकारी एवं सुझावों पर आवश्यक कार्यवाही की नितांत आवश्यकता है। अतः सभी प्रांतों से सविनय आग्रह है कि कृपया इस ओर ध्यान दें और राष्ट्रीय कार्यालय द्वारा उठाए गए विभिन्न मुद्दों पर सजग होकर कार्रवाई करें।

अप्रैल २०२४

हमारे सामने अवसर अनेक हैं। हमारे पास साधनों की कमी नहीं है। साथ ही साथ प्रयास करने वालों के लिए सहयोगियों की भी कमी नहीं है। बस आवश्यकता, है संकल्प के साथ आगे बढ़ने की। कुछ प्रांतों में संकल्प शक्ति का अभाव दिख रहा है। यही उनके पिछड़े रहने का कारण है। जो दूसरों की सोचते हैं एवं करते हैं, उनका अपने आप भला होता है। एक बात मैं कहना चाहूँगा कि श्रेय मिले या ना मिले समाज के लिए हमें अपना सर्वश्रेष्ठ देते रहना है। अपने आप सफलता मिलेगी।

मई २०२४

पिछले १ वर्षों में जगह-जगह समाज-बंधुओं से मिलना, उनसे संवाद करना, उनको अपने मित्र मंडली में शामिल करना मेरे लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि हैं। यह प्रभु का आशीर्वाद है। इनसे मिल करके सम्मेलन के वास्तविक स्वरूप का अहसास होता है। इतनी जगह समाज के प्रति समर्पित बंधुओं से मिलकर मैं अपने को उर्जावान महसूस करता है। इसमें कोई शक नहीं की सम्मेलन ने एक बहुत लंबी यात्रा तय की है और इस यात्रा के दौरान एक मजबूत आधार का निर्माण हो चुका है। लगन, निरंतर क्रियाशीलता एवं दूरदर्शिता के द्वारा हम हमारी शक्तियों को क्रियान्वित कर अपेक्षित फल प्राप्त कर सकते हैं। हम यह तो जानते हैं कि हम क्या हैं पर, हम यह नहीं जानते कि हम क्या बन सकते हैं।

जून २०२४

प्रांतों से अनुरोध किया गया कि राष्ट्रीय पदाधिकारियों द्वारा भेजे गए पत्रों का संज्ञान लेकर उन पर त्वरित कार्यवाही हो। अनेकों बार अनुरोध करने के बावजूद इस सत्र में कुछ प्रांतों से एक भी त्रैमासिक रपट प्राप्त नहीं हुई हैं। समाज सुधार के मुद्दे पर राष्ट्रीय कार्यालय से वीडियो भी जारी किया गया है जिसे सभी सदस्यों को व्हाट्सअप एवं फेसबुक द्वारा भेजा गया है। सभी से सविनय निवेदन है कि इस वीडियो को प्रत्येक सदस्य अधिक से अधिक संख्या में अपने इष्ट मित्रों एवं जान पहचान वालों को भेजें। सोशल मीडिया युग में प्रचार का यह सशक्त माध्यम है। इसका हमें भी लाभ उठाना चाहिए।

जुलाई २०२४

'आपणो समाज – एक समाज – श्रेष्ठ समाज'। समाज में जो बिखराव है हम; स्वयं को भिन्न-भिन्न घटकों में बांट रखे हैं, उससे हमें ऊपर उठना होगा। अपनी आवाज को सशक्त करनी है तो समाज को संगठित होना होगा। मैं सभी बंधुओं से अनुरोध करूँगा कि एकबद्ध होकर समाज के सामूहिक चुनौतियों का सामना करने की आज आवश्यकता है। एकता के अभाव में हमारे हमारा धन और रुतबा सब धरा रह जाएगा।

अगस्त २०२४

ऐसा देखा गया है कि प्रांतों को राष्ट्रीय कार्यालय द्वारा भेजे गए पत्रों एवं सुझाव पर प्रांतों से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिलती हैं। समाज सुधार के कार्यक्रम को शाखा स्तर पर अपनाया जाना अत्यंत आवश्यक है। इन विषयों पर सभी शाखाओं को गोष्ठी आयोजित करनी चाहिए। संस्कार-संस्कृति-चेतना का कार्यक्रम एक प्रभावशाली कार्यक्रम है, जिसके तहत हम नई पीढ़ी को अपने संस्कार संस्कृति के बारे में जानकारी देकर उन्हें अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं। हमें यह सोचना होगा कि उन्हें किस तरह से यह बताया जाए एवं यह बात उनके गले उतारा जाए कि पैसा कमाना ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य नहीं है बल्कि चरित्र, सदभावना और ईमानदारी भी उससे अधिक नहीं तो उतना ही महत्वपूर्ण है।

सितम्बर २०२४

सम्मेलन की असली ताकत शाखा स्तर पर है। साथ ही साथ यह भी महसूस करने लगा हूँ कि इस ताकत की उर्जा को

व्यापक समाज हित में लगाने की अपार संभावनाएं अभी बाकी हैं। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि सम्मेलन हनुमान की तरह है, इसे स्वयं की ताकत का एहसास नहीं है। इस ताकत, उर्जा को समाज हित में लगाने के लिए कुछ प्राथमिकताएँ निर्धारित करने की आवश्यकता है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए मैंने सम्मेलन के पांच सूत्रीय कार्यक्रम की घोषणा सूरत में की थी। इन कार्यक्रमों को शाखा स्तर से प्रारंभ करने की आवश्यकता है। हम सभी जानते हैं कि समाज सेवा मारवाड़ी समाज के डीएनए में हैं। उसी प्रकार समाज सुधार सम्मेलन के डीएनए में हैं।

अक्तूबर २०२४

समाज की सोच में मौलिकता की जगह अंधी दौड़ है। इस विकटपरिस्थिति में सम्मेलन के सामने एक विराट चुनौती हैं; अपनी सार्थक भूमिका को स्थापित करना। समाज दिग्भ्रमित है। परिवर्तन सब चाहते हैं पर स्वयं को कोई बदलना नहीं चाहता। समाज को कर्तव्यनिष्ठ, विनम्र, संवेदनशील, सेवा भाव से भावित दूसरों को विकसित होने का जो अवसर दे ऐसे लोगों की आवश्यकता है। मेरा ऐसा मानना है कि समाज सेवा के साथ-साथ सदस्यों के हित के भी कुछ कार्यक्रम करने होंगे। साथ ही साथ समाज के लिए जो अत्यंत महत्वपूर्ण आवश्यकता है वह है संस्कार संस्कृति की पुनर्स्थापना एवं सामाजिक विसंगतियों एवं कुरीतियों का उन्मूलन।

स्थापना दिवस विशेषांक, दिसंबर २०२४

मेरा यह विनम्र आग्रह है कि सम्मेलन के **संस्कार-संस्कृति-चेतना** कार्यक्रम को एक अभियान में परिवर्तित करने के लिए सब मिलकर हर संभव प्रयास करें। शाखा, प्रांतीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर इस संबंध में जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को हर संभव प्रयास करना हमारा पवित्र कर्तव्य है।

जनवरी २०२५

यह भी आवश्यक है कि सभी प्रांत सम्मेलन द्वारा घोषित कार्यक्रम में ही अपनी उर्जा लगायें। समाजोपयोगी प्रकल्पों का स्वागत है, किन्तु हमारा लक्ष्य कुछ और हैं। सभी बड़ी संस्थाओं में जैसे लायंस, रोटरी आदि में घोषित केंद्रीय कार्यक्रमों को सभी इकाई संचालित करते हैं। इसी से संस्था की अपनी विशिष्ट पहचान बनती हैं। अतः इस बात का ध्यान हम सभी को रखने की आवश्यकता हैं।

अप्रैल २०२५

ज्योतिष और आध्यात्म

"सदा न संग सहेलियाँ, सदा न राजा देश।
सदा न जुग में जीवणा, सदा न काला केश।
सदा न फूलै केतकी, सदा न सावन होय।
सदा न विपदा रह सके, सदा न सुख भी होय
सदा न मौज बसन्त री, सदा न ग्रीष्म भाण।
सदा न जीवन थिर रहे, सदा न संपत माण।
सदा न काहू की रही, गल प्रीतम की बांह।
ढ़लते ढ़लते ढ़ल गई, तरवर की सी छाँह।"

कविता

मारवाड़ी भाषा रो आणंद

भाईचारो मरतो दीखे,
पईसां लारे गेला होग्या।

घर सुं भाग गुरुजी बणग्या,
चोर उचक्का चेला होग्या।

चंदो खार कार में घुमे,
भगत मोकळा भेळा होग्या।

कम्प्यूटर रो आयो जमानो,
पढ़ लिख ढ़ोलीघोड़ा होग्या।

पढ़ी-लिखी लुगायां ल्याया
काम करण रा फोङा होग्या।

घर-घर गाड़ी-घोड़ा होग्या,
जेब-जेब मोबाईल होग्या।

छोरयां तो होती आई पण
आज पराया छोरा होग्या।

राल्यां तो उधड़बा लागी,
न्यारा-न्यारा डोरा होग्या।

इतिहासां में गयो घूंघटो,
पाऊडर पुतिया मूंडा होग्या।

झरोखां री जाल्यां टूटी,
म्हेल पुराणां ढूंढा होग्या।

भारी-भारी बस्ता होग्या,
टाबर टींगर हळका होग्या

मोठ बाजरी ने कुण पूछे,
पतळा-पतळा फलका होग्या।

रूंख भाडकर ठूंठ लेग्या
जंगळ सब मैदान होग्या।

नाडी नदियां री छाती पर
बंगला आलीशान होग्या।

मायड़ भाषा ने भूलग्या,
अंगरेजी का दास होग्या।

पूण कका रा आवे कोनी,
ऐमे बी.ए. पास होग्या।

सत संगत व्यापार होग्यो,
बिकाऊ ए भगवान होग्या।

आदमी रा नाम बदलता आया,
देवी देवता रा नाम बदलग्या।

भगवा भेष ब्याज रो धंधो,
धरम बेच धनवान होग्या।

ओल्ड बोल्ड मां बाप होग्या,
सासु सुसरा चौखा होग्या।

सेवा रा सपनां देख्या पण
आंख खुली तो धोखा होग्या।

बिना मूँछ रा मरद होग्या,
लुगायां रा राज होग्या।

दूध बेचकर दारू ल्यावे,
बरबादी रा साज होयग्या।

तीजे दिन तलाक होयग्यों,
लाडो लाडी न्यारा होग्या।

कांकण डोरां खुलियां पेली,
परण्या बींद कंवारा होग्या।

बिना रूत रा बेंगण होग्या,
सियाळा में आम्बा होग्या।

इंजेक्शन सूं गोळ तरबूज,
फूल-फूल कर लम्बा होग्या।

दिवलो करे उजास जगत में,
खुद रे तळे अंधेरा होग्या।

मन मरजीरा भाव होग्या,
पंसेरी रा पाव होग्या।

थे पढ़र मजो ल्यो, सन्देशो तो
जरूर नवो होसी।

घणा घणा रामरामसा

आलेख

संस्कृति साधक विष्णु-ज्योतिः आधुनिक असमिया संस्कृति

उमेश खंडेलिया, धेमाजी

२० जून का दिन अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग कारणों से महत्वपूर्ण होता है। हमारे लिए भी हैं। समस्त असम वासियों एवं २० जुन में काफी नजदीकी रिश्ता है। यह दिन कला-गुरु विष्णु राभा का स्मृति दिवस है। समस्त असमवासी अपने-अपने स्तर से अपनी-अपनी तरह से इन्हें याद करते हैं। विप्लवी, सृष्टिशील, शिल्पी आदि सभी कलागुरु विष्णु राभा के प्रति श्रद्धा अर्पित करते हैं। विष्णु राभा द्वारा असमिया समाज, साहित्य व संस्कृति के क्षेत्र में प्रदत्त बहु आयामी अवदान का मूल्यांकन शब्दों में कतई संभव नहीं है क्योंकि उनकी सृष्टि की परिधि काफी व्यापक और विशाल रही है। वे बनना तो चाहते थे फुटबॉल खिलाड़ी किन्तु जीवन-पथ पर चलते-चलते परिस्थितियों के आह्वान पर क्या-क्या बनते चले गये, इससे वे खुद भी अनजान रहे। उन्होंने जो भी किया, वही उनके लिए आत्मानुसंधान की नवीन सृजनता बनी। चित्रांकन, गीत, नृत्य, अभिनय आदि उन्होंने क्या नहीं किया। विष्णु राभा राजनीति भी करते थे। उनके राजनीतिक मतादर्श के पंथ को लेकर विधिज जनों में मत पार्थक्य हो सकता है, किन्तु इसके बावजूद उनकी विश्वसनीयता व स्वीकार्यता में कोई कभी नहीं रही।

विष्णु राभा के व्यक्तित्व का अध्ययन करने वालों का स्पष्ट मानना है कि विश्वमुखी चिन्तन शैली ने उन्हें विश्व नागरिक के रूप में प्रतिष्ठित किया। इनके बहुआयामी व्यक्तित्व के निर्माण में गण-शिल्पी ज्योतिप्रसाद अग्रवाल की सहभागिता की विशेष भूमिका रही है। प्रख्यात साहित्यकार भवानी प्रसाद अधिकारी ने लिखा है विष्णु राभा ज्योतिभक्त थे। उनकी ज्योति प्रीति सतही नहीं बल्कि आदर्शों के प्रति समर्पण के साथ थी। लेखक ने दोनों को एक दूसरे का पूरक मानते हुए, दोनों कलाकारों का सूक्ष्म अध्ययन करते हुए लिखा है – ज्योति प्रसाद असमिया जन-जीवन का स्पन्दन अनुभव कर लेते थे। असमिया समाज और यहाँ की मिट्टी की गंध में मोहित उनकी आत्मा असमिया संस्कृति की दुर्दशा को देखकर तड़पती थी। विदेश और स्वदेश की वाक् विचित्रता व भाव प्रकाश शैली का गहन विश्लेषण करके एक नया रूप देना उनकी अनूठी अभिरुचि थी। मानो ज्योति देश-विदेश के चुने हुए हीरे-मोतियों से असमिया वस्त्रों को सजाकर नयी पहचान दे रहे थे तो विष्णु राभा असमिया साँचे में नयी-नयी प्रतिभाओं के सृजन से एक नये असमिया परिवेश - संस्कृति का गठन करने के प्यास में जुटे थे। ज्योति प्रसाद को विस्तृत व प्रसारित मानसिकता के साथ विष्णु प्रसाद की विश्वमुखी चिन्ता के अनोखे समन्वय के कारण दोनों में एक दूसरे के प्रति गहरा स्नेह व निकटता थी। दोनों ही परंपरा प्रेमी थे। गौरवमयी असमिया परंपरा के प्रति सदा समर्पित उन दोनों महान आत्माओं को असमिया मात्र हृदयासिक्त स्नेह से ससम्मान पाद-अर्घ्य, वन्दना करके अपने आपको धन्य मानते हैं।

२० जून राभा दिवस व १७ जनवरी शिल्पी दिवस के किसी भी आयोजन में शामिल कोई संवेदनशील व्यक्ति अनायस ही अन्दाजा लगा सकता है कि असमिया जनमानस में इन दोनों महान कलाकारों के प्रति कितनी गहरी श्रद्धा और आस्था है। असमिया साहित्य में इन विभूतियों पर हजारों पन्नों का अध्ययन प्रकाशित हो चका है, परन्तु लेखक व पाठक वर्ग आज भी इसे प्रारंभिक अध्ययन मानते हुए और अधिक प्रयास की अपेक्षा करता है।

श्री अधिकारी ने एक कदम और आगे बढ़ाते हुए उसी लेख में पुनः लिखा है – पृथ्वी पर जिन महापुरुषों ने जन्म ग्रहण किया है उनमें तीन को परंपराओं के सृजक या प्रतीक (कृष्टी'र आक'र) के रूप में जाना जाता है। एक हैं स्वयं श्रीकृष्ण, जो जीत, वाद्य, राजनीति, धनुर्विद्या, रणनीति, सर्वगुण निधान थे। इट ली के लियोनाडों द विन्सी, जो कि वैज्ञानिक, चित्रकार व राजनीतिज्ञ के रूप में विश्व में प्रतिष्ठित हैं। इनके बाद तीसरे व्यक्तित्व के रूप में असम के महापुरुष श्री श्री शंकरदेव उल्लेखनीय हैं। शंकरदेव को पूरा असमिया समाज गुरु के रूप में पूजता है। असमिया परंपरा, साहित्य या संस्कृति शंकरदेव के योगदान के बिना निर्जीव है। श्रीमंत शंकरदेव क्या नहीं जानते। उन्होंने क्या नहीं दिया मानव समाज को, विशेषकर असम को। ऐसा कौन-सा क्षेत्र है जो उनकी लेखनी से अछूता रह गया। उन्होंने सब कुछ दिया। गीत, वाद्य, नाट्य, लय-संचार, साहित्य, भावना-नाट, नाम-कीर्तन, घोष-बोरगीत, एकांकिका, नाधर, कोल-मृदंग, ताल, भांजघर, दोलयात्रा, हॉरी, धनसंचय, बैंक व्यवस्था, समाज, धर्म, नीति, कानून, अहिन्सा, नैतिक आन्दोलन, त्याग, वैराग्य, समाधि आदि सब कुछ शंकरदेव की ही देन है। असमिया समाज आज भी पूर्णरूप से शंकरदेव को समझने और स्वीकारने में सफल साबित नहीं हो पाया है। ज्योति प्रसाद ने शंकरदेव की बहुमुखी प्रतिभा को पहचाना और उनके 'दर्श' के मंथन के प्रयास में जुट गये। ज्योति के माध्यम से विष्णु को शंकरदेव की विशालता को काफी नजदीक से देखने का अवसर मिला। 'शंकर दर्शन से विमुग्ध ज्योति-विष्णु ने उनकी धारावाहिकता को बनाए रखने का सफल प्रयास किया, जिसका परिणाम आज हमारे सामने है।

विष्णु राभा अपने उदार व विश्वमुखी चिन्तन के चलते आज भी सर्वत्र ग्रहणीय व वंदनीय हैं। उनकी महानता ने उन्हें व्यापकता दी है। उनके आदर्शों ने सहस्त्रों की संख्या में अनुगामियों को पथ का संधान दिया है। ज्योति प्रसाद के सानिध्य में व उनके समानान्तर निजी चिन्तन और अनूठी शैली में राभा की रचनाओं ने असमिया संगीत में अभिनव धारा का शुरुआत की। राभा ने विश्व-संस्कृति-सागर से - असमिया संस्कृति को विचित्रता प्रदान की। दक्षिण अमेरिकी सुर का असमियाकरण "नाहर फुले नुहुवाय टगर फुले हुआबो" जैसी अनेक रचनाएँ हैं जिनके समायोजन ने असमिया कला-संस्कृति को समृद्धि दी, वहीं राभा को चिरस्वरणीय बनाया। ज्योति-विष्णु का वह काल असमिया समाज संस्कृति का स्वर्णिम का था। १९३६ में असम साहित्य सभा के तेजपुर अधवेशन के अध्यक्ष स्वभाव कवि ख्यात रघुनाथ चौधरी ने अपने उद्दात्त सम्बोधन में कहा था – ज्योति की ज्योति और राभा की आभा से असमिया संगीत का आकाश उज्ज्वल हो उठा है।

यथार्थ पर आधारित विष्णु-ज्योति दर्शन की प्रासंगिकता कभी मलीन नहीं हो सकती। मानव संस्कृति के विकास हेतु इनके आदर्शों की केवल प्रतिष्ठा नहीं वरन् शुद्ध भावना से क्रियान्वन की आवश्यकता है। आशा है संदर्भित जन, संगठन अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन अवश्य करेंगे।

Yours Tastefully
Anmol
TM
Enjoy Great Taste with Good Health
FruitBix
dream
LITE
Marie
Plus
With Best Compliments from:
Anmol Industries Ltd.
BISCUITS, CAKES & COOKIES
BISCUITS
For your comments, complaints and trade related queries write to us at info@anmolindustries.com
or call us at 1800 1037 211 | www.anmolindustries.com | Follow us on:

IAC
SINCE 1959
ISO 9001:2015
ISO 14001:2015
ISO 45001:2018
NABL Accredited Lab

POWERING 47 COUNTRIES ACROSS THE WORLD

IAC Electricals Pvt Ltd is the one stop solution for providing innovative product and services to the electric power utility since 1959

PRODUCTS & SERVICES OFFERED:

- INSULATOR HARDWARE FITTINGS UPTO 1200 kV HVAC & 800 kV HVDC
- AB CABLE & OPGW FITTINGS
- POLE / DISTRIBUTION LINE HARDWARE
- EARTHING, STAY & TOWER ACCESSORIES
- HTLS CONDUCTOR ACCESSORIES & SUB-ZERO HARDWARE FITTINGS
- SUBSTATION CLAMPS & CONNECTORS
- CONDUCTOR, INSULATOR & HARDWARE TESTING FACILITY
- AB CABLES, COVERED CONDUCTORS AND ADSS CABLE ACCESSORIES

Transmission and distribution line hardwares | HTLS Conductor Testing
www.iacelectricals.com info@iacelectricals.com
701, Central Plaza, 2/6, Sarat Bose Road, Kolkata – 700020

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत !

आजीवन सदस्य

श्री मनोज सरावगी मे. अन्नपूर्णा भण्डार, पो. तेजपुर, सोनितपुर, असम	**श्री मनोज सोनी** मे. श्री राधाकिशन स्टोर तेजपुर, सोनितपुर, असम	**श्रीमती माया दूधोरिया** मे. विमल ट्रेडिंग कं., फैंसी बाजार, गुवाहाटी, असम	**श्री मोतीलाल सिपानी** नं.-२, डोलाबाड़ी, तेजपुर, सोनितपुर, असम	**श्री मुकुल बोथरा** अमोलापट्टी, तेजपुर, सोनितपुर, असम
श्रीमती नम्रता चौधरी चौधरी कम्पलेक्स, प्रथम तल, जी.एस.रोड, गुवाहाटी, असम	**श्री नरेन्द्र डाबरीवाल** मे. जनता चिरा उद्योग लोखाव रोड, नगांव, असम	**श्रीमती नीलम अग्रवाल** द्वारा - रामचंद्र अग्रवाल, ५२, जगदीश्वर इंक्लेव, गुवाहाटी, असम	**श्री नीलेष कुमार अग्रवाल** मे. एन.के. इंटरप्राइजेज, एम.डी. रोड, तेजपुर, सोनितपुर, असम	**श्री निर्मल कुमार सीकरिया** वार्ड नं.-५, पो. रेंगिया, कामरूप, असम
श्रीमती नीरू गुप्ता १०२ गोल्डेन इंक्लेव, नारायन नगर, कुमारपाड़ा, गुवाहाटी, असम	**श्री पदम चंद शंकला** मे. बालाजी उद्योग, तेजपुर, सोनितपुर, असम	**श्री पंकज धारिवाल** मे. शुभम गारमेंट्स, मेन रोड, तेजपुर, सोनितपुर, असम	**श्री पंकज कुमार जैन** वार्ड नं.-४, रंगिया, कामरूप, असम	**श्री परमानंद शर्मा** ए.टी. रोड, पो.- टीओक, जोरहाट, असम
श्री पवन कुमार अग्रवाल वार्ड नं.-४, पो.-रंगिया, कामरूप, असम	**श्री पवन कुमार जाजोदिया** शिव मंदिर रोड, वार्ड नं.-४, पो. रंगिया, कामरूप, आसम	**श्री पवन कुमार लोहिया** मे. पवन स्टोर, मेन रोड, पो.- सिलापथार, धेमाजी, असम	**श्री पियुष गट्टानी** मे. होटल एम.डी.एम, मारवाड़ी पट्टी, जोरहाट, असम	**श्रीमती पूनम शर्मा** डॉ. परमेश्वर हैंडीक रोड, पार्बोतिया, तिनसुकिया, असम
श्री प्रदीप कुमार जैन मे. वर्नी बिल्डर्स, कार्तकी बाड़ी, तेजपुर, सोनितपुर, असम	**श्री प्रदीप कुमार जाजोदिया** आर.डी. रोड, वार्ड-४, पो. रंगिया, कामरूप, असम	**श्री प्रदीप कुमार शर्मा** थाना रोड, वार्ड नं.-४, पो. रंगिया, कामरूप, असम	**श्री प्रह्लाद राय बैद** सरस्वती कॉलोनी, वार्ड नं.-६, पो.-रंगिया, कामरूप, असम	**श्री प्रकाश चंद बदेर** मोहिदर रोड, तेजपुर, सोनितपुर, असम
श्री प्रकाश चंद भुरा द्वारा-गुनचंद, दाल चंद, एन.सी. रोड, तेजपुर, सोनितपुर, असम	**श्री प्रमोद अग्रवाल** मे. रिद्धी सिद्धी इलेक्ट्रिकल मेन रोड, बरपेटा, असम	**श्री प्रमोद कुमार अग्रवाल** थाना रोड, वार्ड नं.-४, पो.-रंगिया, कामरूप, असम	**श्री प्रमोद कुमार जैन** मे. गणपति ज्वेलर्स, एन.सी.रोड, तेजपुर, सोनितपुर, असम	**श्री प्रवीण अग्रवाल** मे. सुपर टायर सेल्स एण्ड सर्विस, तेजपुर, सोनितपुर, असम
श्री प्रवीण कुमार पहाड़िया सुरेका मार्केट, ए.टी. रोड, खारूपेटिया, गुवाहाटी, असम	**श्री प्रेम झँवर** मे. श्री बालाजी मार्बल्स, हाथीपिलखाना, तेजपुर, असम	**श्रीमती पूनम अग्रवाल** मानव कल्याण नामघर रोड, तिनसुकिया, असम	**श्रीमती पुष्पा अग्रवाल** मे. अग्रवाल प्रोविजन स्टोर्स बड़ा बाजार, तिनसुकिया, असम	**श्री राधेश्याम झँवर** मे. जय भारत ट्रेडर्स, लेक रोड, तेजपुर, सोनितपुर, असम
श्री राज कुमार अग्रवाल मे. अग्रवाल एजेंसी, एन.टी. रोड, नलबाड़ी, असम	**श्री राज कुमार शर्मा** मे. यश रोड, सिवील अस्पताल रोड, तेजपुर, सोनितपुर, असम	**श्री राजेश शर्मा** मे. राजेन्द्र मोटर, एन.टी.रोड, तेजपुर, सोनितपुर, असम	**श्री राजेन्द्र गोयल** रुपाही अली, जोरहाट असम	**श्री राजेश अग्रवाल** वार्ड नं.-३, सोनार, शिवसागर, असम
श्री राजेश जालान मे. राजेश इलेक्ट्रिकल्स, के.सी. रोड, तेजपुर, सोनितपुर, असम	**श्री राजेश कुमार चौधरी** आर.डी. रोड, वार्ड नं.-४, रंगिया, कामरूप, असम	**श्री राजेश कुमार झवर** दिगम्बर चौक, जोरहाट, असम	**श्री राजीब जैन** मे. अमर ट्रेडर्स, एन.बी. रोड, तेजपुर, सोनितपुर, असम	**श्री राज कुमार बैद** आर.डी. रोड, वार्ड नं.-४, रंगिया, कामरूप, असम
श्री राज कुमार सरावगी सरस्वती कालोनी, वार्ड-६, रंगिया, कामरूप, असम	**श्रीमती राखी गोयल** अम्बे रेसीडेन्सी, माकुम रोड, तिनसुकिया, असम	**श्री राम अवतार गाड़ोदिया** मे. आर.ए. गाड़ोदिया एंड कं., तेजपुर, सोनितपुर, असम	**श्री राम चंद्र वर्मा** रंगपुरिया, घोड़ामारा, डिब्रूगढ़, असम	**श्री राम प्रसाद बेरिया** मे. अग्रवाल फर्मास्यूटिकल्स, बैनी बट, जोरहाट, असम
श्री रामअवतार झँवर द्वारा-किशनलाल रामप्रसाद, के. सी. रोड, तेजपुर, सोनितपुर, असम	**श्री रमेश बजाज** शिव मंदिर रोड, वार्ड नं.-४ रंगिया, कामरूप, असम	**श्री रमेश कुमार गाड़ोदिया सीए** मे. गाड़ोदिया आर.के एण्ड असोसिएट्स, तेजपुर, सोनितपुर, आसम	**श्री रमेश राठी** बरौनी बट, जोरहाट, असम	**श्री रामनाथ चमड़िया** मे. चमड़िया इंटरप्राइजेज, के.सी. रोड, तेजपुर, असम
श्री रामौतार अग्रवाल रंगिया बाजार, वार्ड नं.-४, पो.रंगिया, कामरूप, असम	**श्री राम रतन पांडिया** पांडिया निवास, रबड़ बगान, तेजपुर, सोनितपुर, असम	**श्री रतन कुमार सीकरिया** वार्ड नं.-६, रंगिया, कामरूप असम	**श्रीमती रेणु बिर्मीवाल** मानव कल्याण नामघर रोड, पथ नं.-३, तिनसुकिया, असम	**श्री ऋषिकेश पारीक** सिवील रोड, तेजपुर, सोनितपुर, असम
श्री सजन कुमार चौधरी बरूआ रोड, नलबाड़ी, असम	**श्री सज्जन कुमार भूत** मे. मनोज ट्रेडिंग कार्पोरेशन, के. सी.रोड, तेजपुर, सोनितपुर, असम	**श्री संजय बोथरा** मे. चुन्नीलाल बोथरा एंड संस जी. डी. रोड, तुजपुर, सोनितपुर, असम	**श्री संजय कुमार सुरेका** मे. वी.के. सुरेका एंड कं., जमन मार्केट, जेल रोड, गुवाहाटी, असम	**श्री सांवरमल मोदी** मे. एस.के. इंटरप्राइजेज, डेली बाजार, माकुम, तिनसुकिया, असम
श्रीमती सरस्वती मालपानी मे. मालपानी नर्षिंग होम, आर. एम. रोड, जोरहाट, असम	**श्रीमती सरिता चमड़िया** अंकित ट्रेडिंग कं., चैम्बर रोड, तिनसुकिया, असम	**श्रीमती सरला गोयल** मे. विनायक हेरिटेज, फ्लैट नं.-५ए, तिनसुकिया, असम	**श्री श्रवण कुमार ट्रेलर** अमृत महंत बिल्डिंग, एफ.ए. रोड, गुवाहाटी, असम	**श्री श्रीराम पाटोदिया** मे. महालक्ष्मी असोसिएट्स बी.आर. रोड, तेजपुर, असम
श्री श्याम सुंदर जालान जे.बी. आई, एन.टी. रोड, नलबाड़ी, असम	**श्री सिद्धार्थ जैन** मे. पूरब आटोमोबाइल्स, ए. एच. रोड, तेजपुर, सोनितपुर, असम	**श्रीमती सोभा जागोदिया** जाजोदिया मेन्शन, पार्वती फीडर रोड, तिनसुकिया, असम	**श्री सुखदेव राम बिजरानियाँ** मे. हार्डवेयर हाउस, मेन रोड, सिलापथार, धेमाजी, असम	**श्री सुंदरलाल लुणावत** द्वारा-मनमल सुंदरलाल, वार्ड-७, सोनारी, शिवसागर, असम
श्री सुनील कुमार जैन शांतिपुर, वार्ड नं.-५, रंगिया, कामरूप, असम	**श्री सुनील कुमार जालान** मे. एस.एस. मार्केटिंग, सी.के. दास रोड, तेजपुर, सोनितपुर, असम	**श्री सुनील कुमार शर्मा** मे. सुनील ट्रेडिंग कं., ए.टी. रोड, माकुम, तिनसुकिया, असम	**श्री सुनील पाटनी** मे. कम्पुटेक इंडिया, तेजपुर, सोनितपुर, असम	**श्री सुनील सराफ** मे. होटल के. आर. सी. प्लेस, तेजपुर, सोनितपुर, असम
श्री सुरेन्द्र अग्रवाल मे. पी.डी. ट्रेड एजेन्सी, एम. सी. रोड, तेजपुर, असम	**श्री सुरेन्द्र वर्मा** पो. माकुम, डिब्रूगढ़, आसम	**श्री सुरेश कुमार महेश्वरी** इम्पेरियल प्रेम ज्योतिष रोड, तेजपुर, असम	**श्री सुरेश सिरोहीया** मे. राज इलेक्ट्रीक एंड ट्रेडिंग कं., तेजपुर, असम	**श्री सुशील भट्टड़** मे. मेडीकोज, ए.टी. रोड, जोरहाट, असम
श्री सुशील कुमार गोल्छा मे. जी. फैशन, मेन रोड, तेजपुर, असम	**श्री सुशील कुमार पोद्दार** मे. भारत ग्लास एंड प्लाईवूड तेजपुर, असम	**श्रीमती सुशीला अग्रवाल** एम.ए. रोड, गुवाहाटी असम	**श्री त्रिलोक चंद जगती** नामटोला रोड, सोनारी, शिवसागर, असम	**श्री उगम चंद बैद** मे. बबलू फोटो इम्पोरियम तेजपुर, सोनितपुर, असम

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत !

आजीवन सदस्य

श्री उज्ज्वल सिंघल थाना रोड, चीनापट्टी, माकुम, तिनसुकिया, असम	**श्री उत्तम शर्मा** मे. शर्मा होटल, ए.टी. रोड, डिकम बाजार, डिब्रूगढ़, असम	**श्री वासुदेव शर्मा** ज्योतिनगर, पो. रंगिया, कामरूप, असम	**श्रीमती वसुधा जालान** मे. जालान आटोमोबाईल्स माकुम रोड, तिनसुकिया, असम	**श्री विजय शर्मा** एन.टी. रोड, तलबाड़ी, असम
श्री विकास शर्मा वार्ड नं.-४, पो. रंगिया, कामरूप, असम	**श्री विकास शर्मा** मे. शर्मा ड्रग्स सर्जिकल माकुम, तिनसुकिया, असम	**श्री विनोद बोथरा** के.सी. रोड, पो.-तेजपुर, सोनितपुर, असम	**श्री योगेश कुमार शर्मा** आर.डी. रोड, वार्ड नं.-४, पो. रंगिया, कामरूप, असम	**श्री ए. एस. अग्रवाल** २७, दीन दयाल नगर कानपुर, उत्तर प्रदेश
श्री अभिषेक अग्रवाल १०/४३४, सी. खलासी लाईंस, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री आदित्य पोद्दार** १३३/२११, एम. ब्लॉक, किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री अमित कुमार अग्रवाल** १३३/२३७, एम. ब्लॉक, किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री आनंद मोहन अग्रवाल** मे. विनायक ट्रेडर्स, १५६बी, दादा नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री अनिल अग्रवाल** एफ-१०, नारायण प्लाजा, नयागंज, कानपुर, उत्तर प्रदेश
श्री अनिल कुमार जैन २२६, एन. ब्लॉक, किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री अंकुर अग्रवाल** ७/१९०-ए, स्वरूप नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री अरूण कुमार भगत** ५४/१२, नयागंज, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री आशीष अग्रवाल** मे. गर्ग कार्पोरेशन, ८७/६, हीरागंज, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री आशीष केडिया** किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश
श्री अशोक जौहरी नाथू सिंह रोड, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री अशोक कुमार अग्रवाल** ४७, एम. आई. जी, सेक्टर-३, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री अश्विनी कुमार गोयल** १२८/३३८, एच ब्लॉक, किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री अविनाश खेमका** १७/११-सी, कुरसवॉं मॉल रोड, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री बाल कृष्ण देवड़ा** किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश
श्री बिजेंद्रर कुमार सिंघल स्वरूप नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री गिरराज किशोर अग्रवाल** किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री गोविंद बगड़िया** केशव नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री इन्द्र कुमार लाडिया** जूही गौशाला, हमीरपूर रोड, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री कमल अग्रवाल** ५५/११२, जनरल गंज, कानपुर, उत्तर प्रदेश
श्री कमल कुमार टेकरीवाल मे. नारायणी ट्रेडिंग कं. कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री कामता प्रसाद गर्ग** द्वारा-नवल किशोर एण्ड ज्वेलर्स, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री महेन्द्र कुमार अग्रवाल** किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री महेन्द्र कुमार लाडिया** जूही गौशाला, हमीरपुर रोड, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री महेश कुमार भगत** ५५/५७, काहू कोठी, कानपुर, उत्तर प्रदेश
श्री मनीष कुमार अग्रवाल किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री मनोज अग्रवाल** कैनल रोड, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री मुकेश भूतोडिया** किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री नवीन चौधरी** मे. कानपुर प्लास्टिक एजेंसी किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री निरंजन लाल टिबड़ेवाल** मे. इंडस्ट्रियल सेल्स कार्पोरेशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश
श्री ओम सिंह राजपुरोहित शक्ति नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री ओंकार नाथ गुप्ता** तिलक नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री पवन अग्रवाल** कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री प्रदीप केडिया** किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री प्रेम चन्द जयसवाल** कानपुर, उत्तर प्रदेश
श्री प्रिंस जौहरी बिरहाना रोड, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री पुनीत अग्रवाल** आनन्द पुरी, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री राजेन्द्र अग्रवाल (पप्पू)** आनन्दपूरी, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री राजेन्द्र कानोड़िया** ५२/१, शक्करपट्टी, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री राजेश कुमार चौधरी** किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश
श्री राजेश माहेश्वरी किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री राकेश रावतिया** ७५/२३, हलसी रोड, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री रक्षक केडिया** जूही गौशाला, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री रमन माहेश्वरी** किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री रोहित तुलस्यान** केशव नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश
श्री सचिन गोयनका जनरल गंज, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री शालीगराम अग्रवाल** मे. बाबा की दुकान, जनरल गंज, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री संदीप अग्रवाल** किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री संजय बंका सी.ए.** बिरहाना रोड, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री संजय कुमार अग्रवाल** टी. वी. नगर, आनन्दपुरी, कानपुर, उत्तर प्रदेश
श्री सतीश चन्द अग्रवाल नयागंज, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री शिवम अग्रवाल** कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री सुभाष अग्रवाल** कृष्णा बिहार, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री सुधीर तुलस्यान** किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री सुमित अग्रवाल** किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश
श्री सुमित कुमार अग्रवाल किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री सुशील अग्रवाल** किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री सुशील कुमार ककरानियाँ** किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**डॉ. टिकम चन्द सेठिया** तिलक नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री वासुदेव सराफ** कानपुर, उत्तर प्रदेश
श्री विकास अग्रवाल किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री विनम्र गुप्ता** तिलक नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री विनोद संगोई** किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री विपिन कुमार अग्रवाल** मे. अमृतसर टाईल्स स्टोर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री विपुल गोयल** दर्शन पूर्वा, कानपुर, उत्तर प्रदेश
श्री विशाल जैन नयागंज, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री विष्णु गोपाल ककरानियाँ** किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री अजय बेरिवाल** एम. जी. मार्ग, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री अमर अग्रवाल** टॉपगे बिल्डिंग, टॉप फ्लोर, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री अनिल राज सिंघल** मे. श्रुति इंटरप्राईजेज, बी.एस रोड, तडोंग, गैंगटोक, सिक्किम
श्री अनिल सिंघल लाजा होमा डेवलपमेंट एरिया, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री अशोक सारदा** मे. अंबर इलेक्ट्रोनिक्स, सारदा बिल्डिंग, तडोंग, सिक्किम	**श्री भरत कुमार अग्रवाल** मे. सम्राट, एम.जी. रोड, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री बिजय अग्रवाल** मे. भोजोहरि हार्डवेयर स्टोर, भोजोधरि, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री गजानंद शर्मा** बंसल रोड, कैरियर एम. जी. रोड, गैंगटोक, सिक्किम
श्री हेमन्त अग्रवाल मे. नेटो, (सिक्किम फूटवेयर), गैंगटोक, सिक्किम	**श्री आई. बी. गोयल** मिली बिल्डिंग, नम नम रोड, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री जितेन्द्र गोयल** शॉप नं.-८, लाल बाजार काम्पलेक्स, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री जीवन डाबरीवाल** डाबरीवाल हाउस, एम. जी. मार्ग, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री कैलाश अग्रवाल** मे. आनंद स्टोर, एम. जी. रोड, गैंगटोक, सिक्किम

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत !

आजीवन सदस्य

श्री केशु कुमार अग्रवाल मे. के.के. इंटरप्राइजेज, नम नम रोड, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री लालचंद खत्री** मे. पदमा ट्रेड लिंक, अपर एम. जी. मार्ग, गैंगटक, सिक्किम	**श्री महेन्द्र कुमार मित्तल** मे. बालाजी साड़ी सेन्टर लाल बाजार, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री महेन्द्र मोहन मर्दा** द्वारा-चांदनी, मर्दा बिल्डिंग, देवराली, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री महेश अग्रवाल** रानीपूल बाजार, गैंगटोक, सिक्किम
श्री मनोज किरण मे. येनि कास्मेटिक्स, एम. जी. रोड, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री मनोज कुमार अग्रवाल** मे. सिक्किम हार्डवेयर स्टोर, गैंगटोक (ई), सिक्किम	**श्री मिन्टू अग्रवाल** मे. सत्यम इंटरप्राइजेज तडोंग, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री मोहन लाल सारदा** महावीर कॉलोनी, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री मोहन लाल उपाध्यय** होटल तिब्बत गैलरी, गैंगटोक, सिक्किम
श्री नन्दलाल शर्मा काजला पैट्रोल पम्प, तडोंग, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री नरेश कुमार अग्रवाल** मे. अभिषेक एंटरप्राइजेज, देवराली, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री नेहरू मर्दा, सी.ए.** १६४/१, तिब्बत रोड, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री ओम प्रकाश थीरानी** कालुराम थिरानी बिल्डिंग, न्यू मार्केट, एम.जी. मार्ग, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री पवन कुमार मित्तल** एम.जी. मार्ग, गैंगटोक, सिक्किम
श्री प्रकाश मुंदरा मुंदरा बिल्डिंग, एम.जी. मार्ग, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री प्रमोद कुमार अग्रवाल** मे. जी.सी.एल. इंटरप्राईजेज, तडांग, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री प्रयाग चंद पेरीवाल** एम. जी. मार्ग, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री पुरूषोत्तम अग्रवाल** द्वारा- विनोद इंटरप्राईजेज, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री राज कुमार मित्तल** मे. राज कुमार मित्तल, लाल बाजार, गैंगटोक, सिककिम
श्री राज कुमार सिंघी मे. राज श्री, एम.जी. मार्ग, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री रमेश कुमार अग्रवाल** मे. उर्बेस ट्रेडर्स, एम.जी. मार्ग, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री रमेश कुमार पेरीवाल** मे. रुची डॉगनस्टिक क्लिनिक एन.एच.वे, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री रामकरण जात** मे. विकास एजेंसीस, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री सज्जन कुमार अग्रवाल** मे. होम डेकर, इंदिरा बाईपास रोड, गैंगटोक, सिक्किम
श्री सत भगवान अग्रवाल मे. रामनिवास अग्रवाल, एम. जी. मार्ग, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री श्याम बागड़ा** मे. मारवाड़ी भोजनालय, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री सुभाष डागा** मे. सिक्किम सेल्स एजेंसी गैंगटोक, सिक्किम	**श्री सुमित अग्रवाल** मे. बंसल ट्रेडिंग को., एम. जी. मार्ग, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री सन्दीप मालू** मे. ओसवाल कर्पोरेशन, न्यू मार्केट, गैंगटोक, सिक्किम
श्री सुरेन्द्र कुमार सारदा मे. टॉप इन टाउन बिल्डिंग, एम.जी.मार्ग, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री सुरेश कुमार अग्रवाल** एम.जी. मार्ग, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री सुशील कुमार गोयल** मे. मोनालिसा स्टोर्स, इंदिरा बाईपास रोड, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री उमेश अग्रवाल** एम. जी. मार्ग, गैंगटोक, सिक्किम	**श्री उमेश कुमार मुंदरा** मे. मुंदरा एन्टारप्राईजेज, पेनलंग, गैंगटोक, सिक्किम
श्री अभिनंदन सरावगी गुरूनानक वार्ड, हीरागंज कटनी, म. प्र.	**श्री आदित्य सरावगी** द्वारा- डॉ. नरेश सरावगी, घंटा घर, कटनी, म. प्र.	**श्री अजय अग्रवाल** ई-८४, साकेत नगर, इंदौर, म. प्र.	**श्री अजय अग्रवाल** २०१, ऋतु राज बिजनेस सेन्टर, बिचौली मरदाना, इंदौर, म. प्र.	**श्री अजय कुमार खंडेलवाल** मे. श्री इंडस्ट्रीज, ४६, इंडस्ट्रीयल एरिया, कटनी, म. प्र.
श्री अजय सरावगी मे. सरावगी टेंट हाउस, हीरा गंज, कटनी. म. प्र.	**श्री अमित अग्रवाल** सी-२०, द्वारका सिटी, मार्गवान, कटनी, म. प्र.	**श्री अमित बिदासरिया** ७११, द रेसीडेन्स, बिचौली मरदाना, इंदौर, म. प्र.	**श्री आनंद कुमार सरावगी** राहुल बाग, गोकुल धाम सोसाइटी, कटनी, म. प्र.	**श्री आनंद सिंघानिया** राजीव गांधी वार्ड नं.-१३, मुरवारा, कटनी, म. प्र.
श्री अनंत अग्रवाल २८६, ब्लर्क कालोनी, परदेसीपुरा, इंदौर, म. प्र.	**श्री अनिल जाजोदिया** १०९३, सुदामा नगर, इंदौर, म. प्र.	**श्री अनिल कुमार गोयनका** किला मैदान, इंदौर, म. प्र	**श्री अनिरुद्ध हालेन** २०, धेनु मार्केट, इंदौर, म. प्र.	**श्री अनूप सिंधल** मे. अग्रवाल पापड़ प्रा. लि., इंदौर, म. प्र.
श्री अंशु खंडेलवाल सुभाष चौक, कटनी, म. प्र.	**श्री अजय कुमार गुप्ता** गोपाला प्रभु रोड, कोच्चिन, एर्नाकुलम, केरल	**श्री अक्षय अग्रवाल** मे. एक्यूमेन कैपिटल एर्नाकुलम, केरल	**श्री अरविन्द सिंघल** मे. एबल ऑटोमोबाइल प्रा. लि., एर्नाकुलम, केरल	**श्री अशोक अग्रवाल** मे. पूजा टेक, एनंमिल्ली नगर, एर्नाकुलम, केरल
श्री भावेश चाण्डक विद्या नगर, एर्नाकुलम, केरल	**श्री दिपक कुमार लाखोटिया** मे. विनायक इनफोटेक एर्नाकुलम, केरल	**श्री गोविन्द लाल शर्मा** कोझिकोड, केरल	**श्री हरी सिंह वर्मा** मे. सूरज इन्फोकॉम, एर्नाकुलम, केरल	**श्री जुगल किशोर भरतीया** कोचीन, एर्नाकुलम, केरल
श्री काण सिंह राव कोझिकोड, केरल	**श्री किशन कुमार शर्मा** कोच्चि, एर्नाकुलम, केरल	**श्री लाजपत राय कचोलिया** मे. कचोलिया एजेन्सी, एर्नाकुलम, केरल	**श्री लक्ष्मी नारायण भट्टड़** मे. कमला टेकस, राजाजी रोड, कोझिकोड, केरल	**श्री मोहनलाल सुदा** मे. दुर्गा टेक्सटाइल, एर्नाकुलम, केरल
श्री मुकेश मित्तल मे. मित्तल ट्यूब्स एण्ड मैलीअबल, एर्नाकुलम, केरल	**श्री नरेन्द्र कुमार** मे. नरेन मार्केटिंग को., गोपाला प्रभु रोड, एर्नाकुलम, केरल	**श्री नवीन मार्दा** मे. नवीन स्टील, एर्नाकुलम, केरल	**डॉ. निरंजन लाल मित्तल** मे. मित्तल ट्यूब्स एण्ड मलीअबल, एर्नाकुलम, केरल	**श्री राधे श्याम दलाल** मे. सूरज केस एण्ड केरी कोझिकोड, केरल
श्री राहुल बयावाला मे. प्रीमियम फेरो एलॉय लि., एर्नाकुलम, केरल	**श्री राजीव कुमार मित्तल** मे. कलकता ट्यूब सेन्टर, एम. जी. रोड, एर्नाकुलम, केरल	**श्री रमेश चन्द अग्रवाल** मे. श्री राहुल फ्लोर मिल प्रा. लि., एर्नाकुलम, केरल	**श्री रमेश शर्मा** मे. श्री आई.टि. प्रोडक्ट, कोझिकोड, केरल	**श्री संजीव कुमार मित्तल** मे. कलक्ता ट्यूब सेन्टर, एर्नाकुलम, केरल
श्री सांवरमल कुमयावत कोझिकोड, केरल	**श्री सौरभ अग्रवाल** मे. विनायक इंटरप्राइजेज, एर्नाकुलम, केरल	**श्री शिव कुमार अग्रवाल** मे. सन्बीम मर्केटाइल बेंचरस प्रा. लि. अर्नाकुलम, केरल	**श्री तकत सिंह राव** कोझिकोड, केरल	**श्री उमराव सिंह** मे. आशापुर ज्वेलर्स, कोझिकोड, केरल
श्री विनय सिंघल मे. डी.एन.ए. स्पोर्ट्स, एर्नाकुलम, केरल	**श्री विशाल कुमार सिंघल** मे. सिंघल लैबस प्रा. लि., एर्नाकुलम, केरल	**श्री अरूण कुमार हालेन** १८२/१, छोटी रवजरानी, तोरण गार्डेन, इंदौर, म. प्र.	**श्री अशोक कुमार अग्रवाल** मे. अशोक कुमार एण्ड कं., घंटा घर रोड, कटनी, म. प्र.	**श्री अशोक कुमार सिगला** एन-५६, अनूप नगर, इंदौर, म. प्र.
श्री अतीन अग्रवाल सी.ए. मे. प्रकृति कार्पोरेट, वाई एन रोड, इंदौर, म. प्र.	**श्री आत्माराम फूलचंद अग्रवाल** धर्म अगान बिल्डिंग, इंदौर, म. प्र.	**डॉ. बनवारी लाल जाजोदिया** बिक्रम टावर, सपना संगीता रोड, इंदौर, म. प्र.	**श्री बासु टिबरेवाल** बिचौली भरदाना, इंदौर, म. प्र.	**श्री दिपक सरावगी** द्वारा- दिपक सरावगी, भालवीय गंज, कटनी, म. प्र.

RUPA®
FRONTLINE
YEH STYLE KA MAMLA HAI!
Toll-free No.: 1800 1235 001 | www.rupaonlinestore.com |
We are also available at: amazon | Flipkart | JioMart
SCAN & EXPLORE

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2024-2026
Date of Publication - 28th June, 2025
RNI Regd. No. 2866/1968

From :
All India Marwari Federation
4B, Duckback House
41, Shakespeare Sarani, Kolkata-17
Phone : (033) 4004 4089
E-mail : aimf1935@gmail.com